TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | शनिवार 28 | अक्टूबर 2023

शाहजहाँपुर से प्रकाशित

वर्ष :2 | अंक :34 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

राम की तपोभूमि में पहुंचे प्रधानमंत्री मंदिरों में टेका मत्था

सुपर स्पेशलिटी अस्पताल का किया लोकार्पण

चित्रकूट एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्रभु श्रीराम की तपोभूमि चित्रकूट पहुंचे। मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगू भाई पटेल व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने हेलीपैड पर उनका स्वागत किया।

प्रधानमंत्री ने चित्रकूट में जानकी कुंड परिसर के भीतर बने सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल का लोकार्पण किया। हॉस्पिटल का लोकार्पण करने के बाद प्रधानमंत्री रघुवीर मंदिर पहुंचे। मंदिर में उन्होंने पूजा-अर्चना की। इसके बाद पीएम ने सद्गुरु संघ सेवा ट्रस्ट की प्रदर्शनी का शुभारंभ कर अवलोकन किया।

इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, कि चित्रकूट के पर्वत, कामदगिरि, भगवान राम के आशीर्वाद से सारे कष्टों और परेशानियों को हरने वाले हैं। चित्रकूट की ये महिमा यहां के संतों और ऋषियों के माध्यम से ही अक्षुण्ण बनी हुई है। पूज्य रणछोड़दास ऐसे ही संत थे। उनके निष्काम कर्मयोग ने मुझे हमेशा प्रेरित किया है। प्रधानमंत्री यहां से जानकी कुंड परिसर में स्थित अरविंद भाई मफ्तलाल की समाधि स्थल पर पहुंचे और ट्रस्ट के प्रथम चेयरमैन मफ्तलाल की 100वीं जन्म वर्षगांठ पर उनकी समाधि स्थल पर श्रद्धा सुमन अर्पित किये। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, 'मुझे खुशी है कि अरविंद भाई का परिवार उनकी परमार्थिक पूंजी को लगातार समृद्ध कर रहा है। मैं इसके लिए उनके परिवार के सभी सदस्यों को बधाई देता हूं। इसके बाद उन्होंने नए सुपर स्पेशलिटी अस्पताल का शुभारंभ किया। इस अवसर पर पीएम ने कहा, 'आज जानकीकुंड चिकित्सालय के नए विंग का लोकार्पण हुआ है, इससे लाखों मरीजों को नया जीवन मिलेगा। आने वाले समय में सद्गुरू मेडिसिटी में गरीबों की सेवा के इस अनुष्ठान को नया विस्तार मिलेगा। आज इस अवसर पर अरविंद भाई मफतलाल की स्मृति में भारत सरकार ने विशेष स्टैंप भी रिलीज किया है। ये पल अपने आप में हम सबके लिए गौरव का पल है, संतोष का पल है। मैं आप सबको इसके लिए बधाई देता हूं।

महामहिम राज्यपाल हाजिर हों!

बदायूं के एसडीएम कोर्ट ने जारी किया समन, मचा हड़कंप

लोक पहल

बदायूँ। भूमि विवाद में बदायूँ की सदर तहसील के उपजिलाधिकारी ने उत्तर प्रदेश की राज्यपाल को ही सम्मन जारी कर उन्हें न्यायालय में हाजिर होने का आदेश दे दिया। विधि व्यवस्थाओं की अनभिज्ञता में जारी इस आदेष की कापी वायरल होते ही बदायूँ से लेकर राज्यभवन तक और शासन प्रषासन में हड़कंप मच गया। राज्यपाल आनंदी बेन पटेल की ओर से उनके सचिव ने जिलाधिकारी बदायूँ को पत्र भेजकर चेतावनी जारी की है।

इस पत्र में लिखा गया कि संविधान के अनुच्छेद 361 के अनुसार संवैधानिक पद पर आसीन व्यक्ति के खिलाफकोई समन या नोटिस जारी नहीं किया जा सकता है. फिर भी एसडीएम ने विधि-व्यवस्थाओं को नजरअंदाज करते हुए राज्यपाल के नाम समन जारी कर उपजिलाधिकारी कोर्ट में अपना पक्ष रखने के लिए हाजिर होने का आदेश दे दिया।

बता दें कि बदायूं के ग्राम लोड़ा बहेड़ी निवासी चंद्रहास ने सदर तहसील के उपजिलाधिकारी न्यायिक कोर्ट में विपक्षी पक्षकार के रूप में लेखराज, पीडब्ल्यूडी के संबंधित अधिकारी व राज्यपाल को पक्षकार बनाते हुए बाद दायर किया था। उपजिलाधिकारी कोर्ट में दायर याचिका के मुताबिक, चंद्रहास की चाची कटोरी देवी की संपत्ति उनके एक रिश्तेदार ने अपने नाम दर्ज करा ली। इसके बाद में उसको लेखराज के नाम बेच दी। कुछ दिन बाद बदायूं बाईपास स्थित ग्राम बहेड़ी के समीप उक्त जमीन का कुछ हिस्सा शासन द्वारा अधिग्रहण किया गया। उस संपत्ति के अधिग्रहण होने के बाद लेखराज को शासन से करीब 12 लाख रुपये की धनराशि मुआवजे के रूप में मिली। जिसकी जानकारी होने के बाद कटोरी देवी के भतीजे चंद्रहास ने सदर तहसील के न्यायिक मजिस्ट्रेट कोर्ट में याचिका दायर कर दी। इस याचिका पर एसडीएम न्यायिक विनीत कुमार की कोर्ट से लेखराज एव प्रदेश के राज्यपाल को`7 अक्टूबर को धारा 144 राज्य संहिता के तहत एक समन जारी किया गया, जो 1 अक्टूबर को राजभवन पहुंचा। इस समन में राज्यपाल को 18 अक्टूबर को एसडीएम न्यायिक की कोर्ट में हाजिर होने और अपना पक्ष रखने को कहा गया। जिस पर राज्यपाल के विशेष सचिव बद्रीनाथ सिंह ने 16 अक्टूबर को डीएम बदायूं को पत्र लिखा। पत्र में इस बात का उल्लेख किया गया कि संवैधानिक पद पर आसीन व्यक्ति के खिलाफ कोई समन या नोटिस जारी नहीं किया जा सकता। राज्यपाल के सचिव ने एसडीएम के समन पर घोर आपत्ति दर्ज कराई। सचिव ने डीएम बदायूं से हस्तक्षेप कर नियमानुसार पक्ष रखने व नोटिस जारी करने वाले के संबंध में आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए। इसपर डीएम मनोज कुमार ने बताया कि संबंधित न्यायिक मजिस्ट्रेट विनीत कुमार को राज्यपाल द्वारा जारी किए गए पत्र और चेतावनी से अवगत करा दिया गया है।

लक्ष्मी के रूप में होगा बेटियों-बहनों का सम्मानः योगी

मुख्यमंत्री ने औरैया को दी करोड़ों की सौगात, बच्ची का किया अन्नप्राशन, बांटे लैपटाप

औरैया एजेंसी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ औरैया पहुंचे। यहां उन्होंने 688 करोड़ रुपये की 145 परियोजनाओं का लोकार्पण-शिलान्यास किया। महिला लाभार्थियों को चेक सौंपे। ककोर के तिरंगा मैदान में आयोजित नारी शक्ति संवाद महिला सम्मेलन में उन्होंने आधी आबादी को संबोधित करते हुए कहा कि बेटियों-बहनों का सम्मान लक्ष्मी के रूप में होगा। उनकी सुरक्षा की गारंटी है। बच्चियों को जन्म से पहले गर्भ में मारने वालों की खैर नहीं। डबल इंजन की सरकार का मिशन 'आधी आबादी' का सम्मान है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम के संबंध में सम्मेलन किया गया है। महिलाओं की उपस्थिति देखकर समझ में आया कि हमारे पूर्वजों ने नारी को शक्ति क्यों कहा है।

कार्यक्रम स्थल पर राज्यसभा सांसद गीता शाक्य व सदर विधायक गुड़िया कठेरिया ने पुष्पगुच्छ और राम दरबार की मूर्ति देकर स्वागत किया। इसके बाद बच्ची को मुख्यमंत्री ने खीर खिलाकर अन्नप्राशन कराया। साथ ही उसके पैरो में पायलें भी पहनाई और उपहार भी दिया। साथ ही, विद्युत सखी को राजकीय आजीविका मिशन के तहत ढाई लाख की चेक सौंपी। वहीं, छात्राओं को लैपटॉप और टैबलेट दिए।

इसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जिले में बनकर तैयार लगभग 238 करोड़ की 81 परियोजनाओं का लोकार्पण और 448 करोड़ की 64 परियोजनाओं का शिलान्यास किया।

बिजली के पैसे से बढ़ेगी 'मिठास'

बिजली निगम गन्ना किसानों को देगा 1361 करोड़ रुपये

लोक पहल

लखनऊ। चीनी मिले गन्ना किसानों के बकाया का भुगतान नहीं कर पा रही है। इसके लिए सरकार ने एक दिलचस्प रास्ता निकालते हुए अहम निर्णय किया है। प्रदेश सरकार ने बजाज समूह की ललितपुर पावर जनरेशन कंपनी के पावर कारपोरेशन पर बकाया 1361 करोड़ रुपये के भुगतान के लिए चीनी उद्योग एवं गन्ना विकास विभाग को धनराशि उपलब्ध कराने का निर्णय किया है। गन्ना विकास विभाग इस धनराशि से संबंधित किसानों का बकाया चुकाएगा। ऊर्जा विभाग के संबंधित प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई।

गन्ना किसानों का चीनी मिलों पर करीब तीन हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का बकाया है। सर्वाधिक देनदारी बजाज चीनी मिल की ही बताई जाती है। ललितपुर पावर जनरेशन कंपनी बजाज समूह की ही है। ऐसे में ललितपुर पावर कंपनी से मिलने वाली बिजली का भुगतान पावर कारपोरेशन द्वारा बजाज समूह को करना था। राज्य सरकार ने कारपोरेशन द्वारा दी जाने वाली 1361 करोड़ रुपये की धनराशि का भुगतान अब बजाज समूह को न करके सीधे गन्ना विकास विभाग को करने का निर्णय किया है ताकि गन्ना किसानों का बकाया चुकाया जा सके। 1361 करोड़ रुपये का भुगतान किए जाने के बाद गन्ना किसानों का दो हजार करोड़ रुपये से कम ही चीनी मिलों पर बकाया रह जाएगा।

इटली में तीन महीने से नहीं पैदा हुआ कोई बच्चा

घटती जन्म दर से कई देश परेशान

इटली एजेंसी। दुनिया के कई देश उम्रदराज होती जनसंख्या से जूझ रहे हैं। इन देशों में जन्मदर की तुलना में मृत्युदर ज्यादा है। रिपोर्ट के मुताबिक, इन देशों में चीन और जापान जैसे विकसित देशों के साथ इटली का नाम भी शामिल होने जा रहा है। इटली में पिछले 3 महीनों से एक भी बच्चे का जन्म नहीं हुआ है। इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने इस समस्या को नेशनल इमरजेंसी बताया है। एक रिपोर्ट के अनुसार, इटली में पिछले तीन महीनों के भीतर एक भी बच्चे का जन्म नहीं हुआ है। वहीं, रॉयटर्स के मुताबिक, 'नेशनल स्टैटिक्स ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार, इटली में जनवरी 2023 से जून 2023 तक जितने बच्चों का जन्म हुआ वो जनवरी 2022 से जून 2022 के बीच जन्में बच्चों की तुलना में 3500 कम हैं।'

सरकार की रिपोर्ट में एक चौंकाने वाली बात यह सामने आई है कि इटली 15 से 49 साल की औरतों की कमी से जूझ रहा है। जिसका मतलब है कि इस देश में प्रजनन की उम्र वाली महिलाओं की कमी हो गई है। मामले की गंभीरता को इस बात से समझा जा सकता है कि इटली की पीएम जॉर्जिया मेलोनी ने इसे नेशनल इमरजेंसी बता दिया है। घटती जनसंख्या से जूझते कई देश बच्चा पैदा करने पर इनाम भी देते हैं। जापान में आबादी बढ़ाने के लिए नई-नई स्कीमें निकाली हैं।

इसी तरह रूस में भी बच्चे के जन्म पर सरकार की ओर से दम्पत्ति को तमाम तरह के उपहार दिए जाते हैं।

50 की उम्र बनी खतरे की घंटी हो सकते हैं रिटायर

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पुलिस में कार्यरत 50 साल से अधिक के पुलिसकर्मी अपनी सेहत को लेकर सजग हो जाएं अगर वह सरकार के फिटनेस टेस्ट में फेल हुए तो उन्हें जबरदस्ती सेवानिवृत्त कर दिया जायेगा। सरकार ने इसको लेकर आदेष जारी कर दिया है। उप्र में पुलिस, पीएसी समेत पुलिस की अन्य सभी शाखाओं में 50 वर्ष से अधिक उम्र वाले कर्मियों की अनिवार्य सेवानिवृत्ति के लिए स्क्रीनिंग की जाएगी। डीजीपी मुख्यालय की ओर से इस संबंध में जारी आदेश में कहा गया है कि ऐसे कर्मी जो 31 मार्च 2023 को 50 वर्ष अथवा इससे अधिक की आयु पूरी कर चुके हैं, उनकी अनिवार्य सेवानिवृत्ति के लिए स्क्रीनिंग होगी। इस बाबत सभी शाखाओं के प्रमुखों को 20 नवंबर तक सूचना भेजने को कहा गया है। योगी सरकार ने सत्ता में आने के बाद कर्मचारियों की कार्यक्षमता की जांच करने के लिए स्क्रीनिंग का आयोजन करने की बात कही थी। इसी के तहत पुलिस व इससे जुड़ी सभी शाखाओं से जुड़े कर्मचारियों की स्क्रीनिंग की जा रही है।

बलिदानों से भरा है क्षत्रियों का इतिहासः जेपीएस राठौड़

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के सम्मेलन में समाज और राष्ट्र की सुरक्षा का संकल्प

लोक पहल

शाहजहाँपुर। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के तत्वाधान में गांधी भवन में आयोजित महासम्मेलन में मुख्य अतिथि प्रदेश के सहकारिता मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जेपीएस राठौड़,ने कहा कि क्षत्रियों ने समाज का शौर्य के साथ कल्याण किया है, क्षत्रियों का इतिहास बलिदानों से भरा पड़ा है। क्षत्रियों को अपने इतिहास पर गर्व होना चाहिए। इजराइल 9 करोड़ लोगो से लड़ने की क्षमता रखता है लेकिन जोधपुर राजघराने ने कभी इजराइल की भी सहायता की थी। इस कारण वहा प्रति वर्ष शौर्य दिवस मनाया जाता है। उन्होंने समाज को छ मंत्र देते हुए कहा कि हम बच्चों को पढ़ाए आपस में बुराई ना करे, वैमनस्यता ना रखे, मृत्यु भोज का बहिष्कार करे, नशा मुक्ति पर बल दे, समाज और राष्ट्र की सुरक्षा व संरक्षण के लिए सदैव सजग रहे। क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ हरिवंश सिंह अपने गौरवशाली इतिहास को सुरक्षित रखने के लिए अपने महापुरुषों का अध्ययन करें। राष्ट्रीय महासचिव राघवेंद्र सिंह राजू ने कहा कि किसी भी क्षत्रिय के सम्मान और स्वाभिमान के लिए जिलाध्यक्ष पदम सिंह ने सभी का स्वागत किया व मुख्य अतिथि से क्षत्रिय समाज के बेटा वेटियो के लिए जनपद में छात्रावास के निर्माण कराई जाने की मांग की संगठन की रूपरेखा प्रस्तुत की।मंडल

ने कहा कि हमें समाज में सामूहिक विवाह पर जोर देना चाहिए इस से दहेज रूपी दानव का खात्मा होगा।हिन्दू रक्षा सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी प्रबोधानंद ने कहा कि हम महासभा हमेशा सक्रिय रहेगी। इस अवसर पर राष्ट्रीय महामंत्री सुखवीर सिंह भदौरिया,विधायक वीर विक्रम सिंह प्रिंस, पूर्व विधायक कुँवर शरद वीर सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अध्यक्ष पवन कुमार सिंह ने ओम का जाप एवं योग चेतना कराया। इस मौके पर सहकारी बैंक के चेयरमैन डीपीएस राठौड़, ब्लाक प्रमुख महेश पाल सिंह,भानु प्रताप सिंह, मुनेश्वर सिंह, राजेश सिंह,सुरेंद्र विक्रम सिंह,पवन सिंह,मानवेंद्र सिंह चौहान,जय गोविंद सिंह,ओंकार सिंह, रविन्द्र सिंह, महिपाल सिंह चौहान, पुतान सिंह, लखन प्रताप सिंह, रामवीर सिंह सोमवंशी,योगेंद्र सिंह, प्रदीप सिंह, आदित्य वीर सिंह, मंगल सिंह, वीनू सिंह, अभिषेक सिंह, उमेश पाल सिंह, मान बहादुर सिंह ,प्रीतम सिंह पुजारी, निलय सिंह, सुमित सिंह भदौरिया ओम सिंह ,विजय प्रताप सिंह,उदित प्रताप सिंह, अमित प्रताप सिंह,मुकेश सिंह परिहार, सुदेश सिंह सत्यवीर सिंह, ब्रजेश सिंह, सुमित सिंह, शेर सिंह ने अंजू सिंह, आदि मौजूद रहे। जिला प्रभारी ओम सिंह से सभी का आभार व्यक्त किया कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुंवर हरिवंश सिंह ने व संचालन जिला महामंत्री मुनीश सिंह परिहार ने किया।

13.83 करोड़ की लागत से बनकर ऑडिटोरियम तैयार

मंत्री सुरेश खन्ना की प्रेरणा व नगर आयुक्त संतोष शर्मा के प्रयासों से शहरवासियों का सपना हुआ साकार

नगर आयुक्त ने किया निरीक्षण

लोक पहल

शाहजहाँपुर। शहर को स्मार्ट सिटी बनाने के लिए विभिन्न परियोजनाओं पर अभी तक काम चल रहा है लेकिन नगर निगम नवनिर्मित ऑडिटोरियम शहरवासियों को समर्पित करने के लिए तैयार है। ऑडिटोरियम का काम करीब-करीब पूर्ण हो चुका है और रविवार को प्रदेश सरकार के वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना इसका लोकार्पण कर सकते है। वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना की प्रेरणा व नगर आयुक्त सन्तोष कुमार शर्मा के प्रयासों से नगर क्षेत्र को स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित किये जाने की दिशा में बढ़ते हुये अंटा चौराहा स्थित नवनिर्मित ऑडिटोरियम का निर्माण कराया गया है। इस ऑडिटोरियम में 5 लोगों के बैठने की व्यवस्था है ०2 कान्फ्रेंस हाल, एक्जीविशन एरिया के साथ ही कलाकारों व अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले लोगों के लिए ग्रीन रूम, एलईडी स्क्रीन, म्यूजिक सिस्टम आदि की व्यवस्था की गई है। यह ऑडिटोरियम शहर को एक अलग पहचान देगा। इसके बेसमेंट में वाहन पार्किंग बनाई गई है। इसके साथ ही इसमें एक बैंकेट हाल और ०2 कांन्फ्रेंस हाल का निर्माण कराया जा रहा है। महिला व पुरूषों के लिए अलग-अलग शौचालायों का निर्माण भी कराया गया है और दो कैन्टीन भी बनाई गई है। बता दें कि अभी तक शहर में सांस्कृतिक गतिविधियों का एक मात्र केन्द्र गांधी भवन सभागार ही था कई बार एक दूसरे ऑडिटोरियम की आवश्यकता महसूस की गई। शहर विधायक और प्रदेश सरकार के

कबीना मंत्री सुरेश कुमार खन्ना के प्रयासों से अंटा चौराहे के पास आधुनिक संसाधनों से सुसज्जित वातानुकूलित ऑडिटोरियम बनकर तैयार है। शहर में दो ऑडिटोरियम हो जाने के बाद अब सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। इस ऑडिटोरियम के निर्माण में करीब 14 करोड़ रूपए की लागत आयी है। नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने लोकार्पण से पहले ऑडिटोरियम का निरीक्षण किया और तैयारियों का जायजा लिया।

एक रूका हुआ शहर शाहजहांपुर

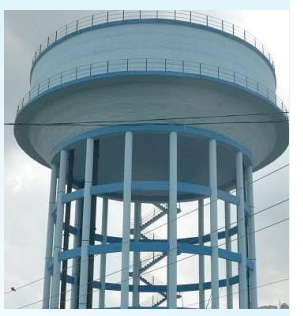

सुयश सिन्हा

शाहजहांपुर। कहने को तो शाहजहांपुर शहर में ट्रिपल इंजन की सरकार है साथ में ही तीन मंत्री, दो सांसद, छह विधायक, पांच एमएलसी, 15 ब्लाक प्रमुख साथ में जिला पंचायत अध्यक्ष भी विकास योजनाओं को गति प्रदान करने के लिए सहभागी है लेकिन शाहजहांपुर शहर एक रूका हुआ शहर बनता जा रहा है। करीब पांच वर्ष पूर्व जब शाहजहांपुर को नगर पालिका से नगर निगम का दर्जा मिला था तो शहरवासियों को मानो तो उम्मीदों के पंख लग गए। शहर के लोग भी बड़े-बड़े शहरों की तरह जीवनशैली में जीने के सपने संजोने लगे। लेकिन उनके सपने पांच वर्ष के लम्बे इंतजार के बाद भी पूरे होते दिखाई नहीं दे रही है। हालांकि नगर निगम बनने के बाद मैट्रोपोलियन शहरों की तरह कई विकास योजनाओं का शुभारंभ हुआ, बड़े-बड़े आयोजन किए गए, पत्थर लगे। योजनाएं समाचार पत्रों की सुर्खियां बनी लेकिन अभी तक धरातल पर शहर में किसी भी योजना में मूर्ति रूप नहीं लिया है। आधी अधूरी कार्यों के चलते जहां योजनाओं की लागत बढ़ रही है वहीं शहरवासियों को भी बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ रहा है। नगर निगम में मेयर और पार्षदों के चुनाव होने के बाद शहरवासियों को कुछ उम्मीदें जगी थी कि शायद अब शहर की तस्वीर बदलेगी लेकिन आपसी खींचतान के चलते नगर निगम बोर्ड शहरवासियों की बेहतरी के लिए काम करने में अभी तक नाकाम ही दिखाई दे रहा है। मेयर अर्चना वर्मा भी शहरवासियों की उम्मीदों पर खरा उतरती नहीं दिखाई दे रही है।

मुसीबतों का सबब बनी सीवर लाईन

सबसे पहले बात अगर महत्वाकांक्षी परियोजना सीवर लाइन की जाए तो प्रदेश के वित्त मंत्री व शहर विधायक सुरेष कुमार खन्ना के प्रयासों से वर्ष 2019 में 377 करोड़ 51 लाख 48 हजार रूपए के इस महत्वाकांक्षी परियोजना को शासन से मंजूरी मिली तथा बजट भी मंजूर हो गया। जून 2021 से सीवर लाइन बिछाने का काम शुरू हुआ लेकिन 2023 खत्म होने को है लेकिन अभी तक सीवर लाइन का काम पूरा नहीं हो पाया है। अलवत्ता शहर की सभी सड़कें और गलियां खुदी पड़ी है लोगों का निकलना मुहाल है बड़े-बड़े गड्ढे आए दिन दुर्घटनाओं को अंजाम दे रहे है। शहर में कुल 186 किलोमीटर सीवर लाइन बिछायी जायेगी।

अमृत योजना में अभी तक घरों में नहीं पहुंचा पानी

इसी तरह शहरवासियों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के लिए अमृत योजना के तहत शहर में नई पाइपलाईन डाली गई है इसके लिए आठ स्थानों पर ओवरहेड टेंक भी बनाए गए हैं लेकिन अभी तक इनसे जलापूर्ति शुरू नहीं हो पाई है जहां पर पाइपलाईन का काम पूरा भी हुआ है वहां पर केवल घरों के सामने पाईप खुला छोड़कर काम बंद कर दिया गया है। अधिकांश घरों में अभी तक कनेक्षन नहीं कराये गये है। जबकि समयावधि पूरी हो चुकी है। ओवरहेड टेंक की टेस्टिंग कराई गई तो कई टेंको में लीकेज पाया गया जिसको ठेकेदार ने कुछ मसाला लगाकर फौरी तौर पर तो रोक दिया लेकिन यह ओवरहेड टेंक कितने कामयाब होंगे यह जलापूर्ति शुरू होने के बाद भी पता चल पायेगा। जलापूर्ति के लिए पाइपलाईन बिछाने का काम भी दो साल से अधिक समय से चल रहा है कई जगह खुदाई के चलते पाइपलाइन क्षतिग्रस्त हो गई है। ओवरहेड टेंक के निर्माण में करीब 50 करोड़ रूपए का खर्च आया है जिनके द्वारा 18 हजार घरों में जलापूर्ति किये जाने का कार्य किया जाना है।

शहर में चारों ओर जाम, ट्रैफिक सिग्नल व्यवस्था फेल

नगर निगम बनने के बाद शहर की ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए आईटीएमएस योजना के तहत शहर में 13 चौराहों व तिराहों पर ट्रैफिक सिग्नल की व्यवस्था लागू की गई। सभी चिन्हित स्थानों पर ट्रैफिक की लाईटें, कैमरा स्थापित किये जा चुके है लेकिन कुछ चौराहों को छोड़कर बाकी सभी जगह ये सफेद हाथी बने खड़े है।

गंदगी के ढेर, घरों से नहीं उठता अब कूढ़ा

शहर को गंदगी से निजात दिलाने के लिए नगर निगम ने घरों व प्रतिष्ठानों से कूढ़ा उठवाने के लिए एक कम्पनी को ठेका दिया। कम्पनी ने अपने लोग भी तैनात किए और 50 रूपए व 100 रूपए का शुल्क लेकर घरों से कूढ़ा भी उठने लगा। यह व्यवस्था भी न तो पूरे शहर में लागू हो पायी और न ही बहुत दिनों तक चल सकी। बताया जाता है कि कम्पनी नगर निगम को चूना लगाकर भाग गई। अब घरों से कूढ़ा उठवाने की कोई व्यवस्था नहीं है। शहरवासी बेतरतीब रूप से इधर-उधर कूढ़ा डालने को मजबूर है।

मिनरल वाटर को तरसे लोग

टाउनहाल तिराहे पर मिनरल वाटर उपलब्ध कराने के लिए एक प्लांट लगाया गया था जिसमें बहुत नाम मात्र के शुल्क पर शहरवासियों को आरओ का पानी उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई ये प्लांट भी उद्घाटन के बाद आज तक चलता नहीं दिखाई दिया।

चूल्हों तक नहीं पहुंची गैस

इसी तरह नगर निगम बनने के बाद शहरवासियों को खाना पकाने की गैस पाइपलाईन के जरिए उपलब्ध कराने की योजना शुरू की गई। एचपीसीएल कम्पनी ने साउथ सिटी, आवास विकास कालोनी में गैस पाइपलाईन डालने का काम शुरू किया। बताया जाता है कि ये गैस सिलेण्डर से करीब 22 से 25 प्रतिशत सस्ती पड़ेगी साथ ही इसका प्रेशर भी तेज होगा। शहर की दो तीन कालोनियों में एचपीसीएल कम्पनी ने गैस पाइपलाईन डाली और घरों में शुल्क लेकर कनेक्षन भी कर दिए लेकिन अभी तक गैस की सप्लाई शुरू नहीं हो पाई है।

शासन-प्रशासन का डेयरी मालिकों को कोई भय नहीं

शहर में गंदगी और ट्रैफिक व्यवस्था में अवरोध उत्पन्न करने का एक बड़ा कारण भैंसो का पूरे दिन आवागमन है। कई बार डेयरी मालिकों के साथ बैठक कर भैंसो के निकलने का समय निर्धारित किया जा चुका है लेकिन उस पर अमल कराये जाने के लिए प्रशासन ने कोई प्रयास नहीं किए। इसके लिए कहीं न कहीं जनप्रतिनिधी भी दोषी है। इस समस्या से निजात दिलाने के लिए नगर निगम ने कैटिल कालोनी बनाए जाने का प्रयास किया है लेकिन यह प्रयास अभी तक फाइलों तक ही सीमित है।

आखिर कब शुरू होगा एनीमल बर्थ कंट्रोल सेन्टर

पूरे शहर में आवारा पशुओं, कुत्तों और बंदरों का आतंक है आये दिन शहरवासी दुर्घटनाओं को शिकार हो रहे है। शहर के पुवायाँ रोड, अजीजगंज, बंकाघाट रोड, आवास विकास कालोनी, बस अड्डा, लाल इमली चौराहा, शास्त्री नगर कालोनी, लोहारो वाला चौराहा, चौक, केरूगंज आदि स्थानों पर रात में कुत्ते झुंड के रूप में इकठ्ठा होकर राहगीरों पर दौड़ते है जिससे तमाम लोग आये दिन घायल होते रहते है। कुत्तों की बढ़ती संख्या को रोकने के लिए नगर निगम ने ककरा कलां में 'ऐनीमल बर्थ कंट्रोल सेन्टर' बनाने की योजना बनाई थी इसके लिए टेण्डर प्रक्रिया भी पूरी हो चुकी है। इसके तहत कुत्तों को पकड़कर उनकी नसबंदी कराई जाएगी जिससे उनकी संख्या को नियंत्रण रखा जा सके। सरकार की यह योजना भी अभी ठंडे बस्ते में पड़ी हुई है अभी तक सेन्टर ने काम करना शुरू नहीं किया है।

हम एक दूसरे के साधक बने बाधक नहीं : सुरेश खन्ना

खत्री समाज के कार्यक्रम में वित्त मंत्री ने किया शस्त्र पूजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। हम एक दूसरे के साधक बने बाधक नहीं राम हमारे आदर्श है हमको राम का जीवन ये बताता है कि परिस्थिति कितनी भी विपरीत हो हमें अपनी मर्यादा नहीं छोड़नी चाहिए। यह विचार प्रदेश के वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने खत्री समाज की ओर से आयोजित शस्त्र पूजन कार्यक्रम में व्यक्त किये। शहर के चौक स्थित खत्री धर्मशाला में आयोजित कार्यक्रम में श्री खन्ना ने कहा कि अगर हम धर्म के रास्ते पर है तो अधर्मी कितना भी शक्तिशाली हो वो पराजित ही होता है। उन्होंने कहा कि हम राम को समझ सके और उनके अंश मात्र को भी आत्मसात कर पाये तो हमारा जीवन धन्य हो जायेगा। पूर्व रामदरबार के स्वरूपों की आरती शस्त्र पूजन व श्री राम जी चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया । इस अवसर पर खत्री सभा के संरक्षक प्रमोद चंद सेठ ने मुख्य अतिथि का अंगवस्त्र कर पहना कर स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन धर्मशाला संयोजक सुमित खन्ना ने किया। अंत में सभी का आभार सभा की अध्यक्ष पूनम मल्होत्रा ने व्यक्त किया।इस अवसर पर नरेंद्र सेठ, अशोक टंडन, महासचिव राजीव मेहरोत्रा, मीनाक्षी कपूर राधिका मेहरोत्रा, रज्जो खन्ना, मितेश मोहन टंडन राजीव खन्ना, ऐश्वर्य सेठ, सुचित सेठ उपस्थित रहेस

'मेरी माटी मेरा देश' कार्यक्रम में गूंजे देशभक्ति के तराने

प्रभारी मंत्री नरेन्द्र कश्यप ने किया शुभारंभ

लोक पहल

शाहजहांपुर। जिला प्रशासन के तत्वावधान में अमृत महोत्सव के अन्तर्गत 'मेरी माटी मेरा देश' कार्यक्रम का आयोजन गांधी भवन प्रेक्षागृह में किया गया। मुख्य अतिथि प्रभारी मंत्री नरेन्द्र कश्यप ने अमर बलिदानी रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां व ठाकुर रोशन सिंह के चित्रों पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन कर किया। इस मौके पर उन्होने कहा कि यह भूमि वह पवित्र भूमि है जहां पर राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन सिह, अशफाक उल्ला खान ने जन्म लिया। मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम का महाआयोजन उन क्रान्तिकारी शहीदों और देश की सीमा की रक्षा करने वाले जवानो को भावभीनी श्रद्धाजंलि है।

कार्यक्रम में माधवराव सिंधिया पब्लिक स्कूल, आर्य महिला इंटर कॉलेज व डॉ सुदामा प्रसाद विद्या स्थली के बच्चों ने देशभक्ति पूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत कर खूब तालियां बटोरीं। कवयित्री सरिता बाजपेई ने देशगीत प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने सभी प्रतिभागियों को सम्मानित किया।

अतिथियों का स्वागत सीडीओ एसबी सिंह ने किया।

कवि डॉ इन्दु अजनबी के संचालन में हुए समारोह में प्रमुख रूप से एडीएम संजय कुमार पाण्डेय, एसपी सिटी सुधीर जायसवाल, नगर मजिस्ट्रेट डॉ वेद प्रकाश मिश्र, एसडीएम सदर शैलेन्द्र गौतम, जिला पंचायत राज अधिकारी, घनश्याम सागर, डीआईओएस हरिवंश कुमार, बीएसए रणवीर सिंह, उपायुक्त मनरेगा बाल गोविन्द शुक्ल, अपर नगर आयुक्त एसके सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष केसी मिश्र, भाजपा महानगर अध्यक्ष शिल्पी गुप्ता, सफाई आयोग के पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र नाथ, विनीत मिश्र समेत नेहरू युवा केन्द्र के पदाधिकारी व काफी संख्या में गणमान्य जन उपस्थित रहे।

गायत्री परिवार की कलश यात्रा में उमड़ा जनसमूह

जगह-जगह पुष्प वर्षा से किया गया स्वागत

लोक पहल

शाहजहांपुर। अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान में आयोजित 1०8 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के प्रथम चरण में बाबा बनखंडी नाथ मंदिर से कलश यात्रा निकाली गई । नारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करती इस कलश यात्रा में पालकी को अपने कंधों पर उठाकर महिलाएं कलश यात्रा के आगे चल रही थी। पालकी पर 33 करोड़ देवी देवताओं का प्रतीक शक्ति कलश स्थापित किया गया था । कलश यात्रा जहां-जहां से निकली वहां वहां भव्य स्वागत किया गया। व्यसन मुक्ति अभियान के अंतर्गत झांकी के साथ मां गायत्री की झांकी भारत माता की झांकी एवं ऋ षियों की परंपरा का प्रतिनिधित्व करती ऋषियों की झांकी कलश यात्रा के साथ चल रही थी। कलश यात्रा गोहरपुरा स्थित यज्ञ स्थल पर जाकर संपन्न हुई । कलश यात्रा को जिला पंचायत अध्यक्ष ममता यादव ने झंडी दिखाकर रवाना किया। अपर जिला अधिकारी (वि/रा) की पत्नी एवं बेटी कलश यात्रा में शामिल हुई।इससे पूर्व बनारस से आए युग ऋषि संदेशवाहक विद्याधर मिश्र ने कलश पूजन करवाया। महिला शक्ति के रूप में जनपद भर से आई महिलाओं ने कलश को अपने सर पर रखकर कलश यात्रा में भाग लिया । कच्चा कटरा क्षेत्र में पहुंचने पर कलश यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। इसके बाद चौक क्षेत्र में सीता की मठिया के निकट श्रद्धालुओं द्वारा जमकर पुष्प वर्षा की। गोहरपुरा स्थित यज्ञ स्थल पहुंचने पर शांतिकुंज हरिद्वार से आई टोली द्वारा कलश स्थापित कर पूजन किया गया। शांतिकुंज से आई टोली नायक संध्या तिवारी के साथ संगीत में नीरू गौतम, नीलम शास्त्री, दिव्या साहू एवं धनेश्वरी साहू, उमा गाड़ियां, राम कुमार बाजपेयी, सारथी त्रिभुवन मिश्रा शामिल रहेंगे। आयोजन में राजाराम मौर्य, सूरज वर्मा, ओमेश्वर सोपेट, रंजीत वर्मा, कौशलेन्द्र मिश्र आदि का विशेष सहयोग रहा।

भरत मिलाप में उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

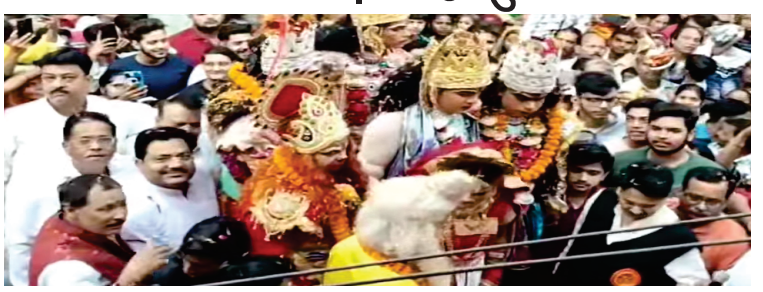

लोक पहल

शाहजहांपुर। खिरनीबाग रामलीला के समापन पर निकाली गई श्रीराम राज्याभिषेक राजगद्दी शोभायात्रा सुबह चौक पहुंची, जहां राम भरत मिलाप हुआ। बड़ी संख्या में लोग इस दृश्य को देखने उमड़े। दलेलगंज में शोभायात्रा का समापन हुआ। यहां सभी स्वरूपों को लाला कालीचरण सेठ धर्मशाला में विश्राम कराया गया। सुबह स्वरुपों को तैयार कर उनकी पूजा अर्चना की गई।

राम जानकी मंदिर के सामने राम- भरत का भावपूर्ण मिलाप हुआ। इस दृश्य को देखने के लिए सड़कों से लेकर छतों पर लोग जमे रहे। राम और भरत एक दूसरे के गले मिले, तो खुशी में लोगों की आंखे भर आईं। भरत लाल की जय, सियावर रामचंद्र की जय, लखन लाल की जय के जयघोष गूंज उठे। श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा की। पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वीरेंद्र पाल सिंह यादव, चंद्र शेखर खन्ना उर्फ धीरू, अजय प्रताप सिंह यादव, विनोद अग्रवाल, नरेंद्र गुरु आदि ने देवस्वरूपों की आरती उतारी। राजगद्दी शोभायात्रा का जगह-जगह भव्य स्वागत हुआ। मंदिरों में देवरूपों की आरती उतारी गई। राजगद्दी शोभायात्रा में कुल 24 देव स्वरूपों की झांकियां शामिल रही। इनमें राममंदिर अयोध्या, केदारनाथ मंदिर, राम दरबार, राम नाम जप करते हनुमान, सुरसा समेत छह झांकियां आकर्षण का केंद्र रही।

डीएम ने किया डिस्ट्रिक्ट कान्टेक्ट सेन्टर का शुभारंभ

शाहजहाँपुर (लोक पहल)। जिलाधिकारी उमेश प्रातप सिंह ने कलेक्ट्रेट स्थित डिस्ट्रिक्ट कान्टेक्ट सेन्टर का फीता काटकर शुभारंभ किया। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदाता सूची के आलेख्य प्रकाशन के 27 अक्टूबर से डिस्ट्रिक्ट कान्टेक्ट सेन्टर की स्थापना करायी गयी है, जो मतदाता सूचियों के अन्तिम प्रकाशन ०5 जनवरी 2०24 तक तथा उसके उपरान्त आयोग के निर्देशानुसार क्रियाशील रहेगा। डीसीसी 24 घंटे कार्यरत रहेगा। डीसीसी का टोल फ्री नम्बर 195० है। राशिद अली खाँ, अपर जिलाधिकारी न्यायिक, डीसीसी के नोडल आफिसर है। टोल फ्री नम्बर पर आपरेटर द्वारा वोटर पोर्टल से जानकारी उपलब्ध करायी जाएगी। इस दौरान मुख्य सीडीओ एस.बी. सिंह, एडीएम प्रशासन संजय कुमार पाण्डेय, नगर मजिस्ट्रेट वेद प्रकाश मिश्रा सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

भारत के शहर शहर में होने वाली रामलीलाएं और उनकी सारगर्भिता

डा. विकास खुराना
इतिहासकार

रामलीला की संस्कृति समुन्नत होती रहनी चाहिए, यह भारतीय समाज का आधार हैदेश की मुख्य धारा पर बसे करोड़ों लोगो को न केवल यह शिक्षित करती है बलकि भौतिक युग में जिस कदर समाज का अवसान होता जा रहा है उसमे परिवारों के मूल्य को स्थापित करने में यह मुख्य भूमिका निभाती है। समुद्र से लेकर हिमाचल तक प्रख्यात रामलीला का आदि प्रवर्तक कौन है। भावुक भक्तों की दृष्टि में यह अनादि है। एक किंवदंति का संकेत है कि त्रेता युग में श्री रामचंद्र के वनगमनोपरांत अयोध्यावासियों ने चौदह वर्ष की वियोगावधि राम की बाल लीलाओं का अभिनय कर बिताई थी। तभी से इसकी परंपरा का प्रचलन हुआ। एक अन्य जनश्रुति से यह प्रमाणित होता है कि इसके आदि प्रवर्तक मेघा भगत थे जो काशी के कतुआपुर महल्ले में स्थित फुटहे हनुमान के निकट के निवासी माने जाते हैं। एक बार पुरुषोत्तम रामचंद्र जी ने इन्हें स्वप्न में दर्शन देकर लीला करने का आदेश दिया ताकि भक्त जनों को भगवान के चाक्षुष दर्शन हो सकें। इससे सत्प्रेरणा पाकर इन्होंने रामलीला संपन्न कराई। तत्परिणामस्वरूप ठीक भरत मिलाप के मंगल अवसर पर आराध्य देव ने अपनी झलक देकर इनकी कामना पूर्ण की। कुछ लोगों के मतानुसार रामलीला की अभिनय परंपरा के प्रतिष्ठापक गोस्वामी तुलसीदास हैं, इन्होंने हिंदी में जन मनोरंजनकारी नाटकों का अभाव पाकर इसका श्रीगणेश किया। इनकी प्रेरणा से अयोध्या और काशी के तुलसी घाट पर प्रथम बार रामलीला हुई थी। रामलीला का मूलाधार गोस्वामी तुलसीदास कृत ष्रामचरितमानसष् है लेकिन एकमात्र वही नहीं। श्री राधेश्याम कथावाचक द्वारा रचित रामायण को भी कहीं-कहीं यह गौरव प्राप्त है। ऐसे काशी की सभी रामलीला में गोस्वामी जी विरचित ष्मानसष् ही प्रतिष्ठित है। इस लोक आयोजन के लिए वर्ष भर दो माह ही अधिक उपयुक्त माने गए हैं - आश्विन और कार्तिक। ऐसे इसका प्रदर्शन कभी भी और कहीं भी किया जा सकता है। काशी के रामनगर की लीला भाद्रपद शुक्ल चौदह को प्रारंभ होकर शरत्पूर्णिमा को पूर्णता प्राप्त करती है और नक्खीघाट की शिवरात्रि से चैत्र अमावस्या अर्थात् 33 दिनों तक चलती है। गोस्वामी तुलसीदास अयोध्या में प्रतिवर्ष रामनवमी के उपलक्ष्य में इसका आयोजन कराते थे। कहीं दिन के अपराह्न काल में और कहीं रात्रि के पूर्वार्ध में इसका प्रदर्शन होता था।

काशी के रामनगर की रामलीला काशी नरेश के सामने होती है। इसकी समाप्ति रावण के पुतले के दहन के साथ होती है। लोकनायक राम की लीला भारत के अनेक क्षेत्रों में होती है। भारत के बाहर के भूखंडों जैसे बाली, जावा, श्री लंका आदि में प्राचीन काल से यह किसी न किसी रूप में प्रचलित रही है। जिस तरह श्रीकृष्ण की रासलीला का प्रधान केंद्र उनकी लीलाभूमि वृंदावन है उसी तरह रामलीला का स्थल है काशी और अयोध्या। मिथिला, मथुरा, आगरा, अलीगढ़, एटा, इटावा, कानपुर, काशी आदि नगरों या क्षेत्रों में आश्विन माह में अवश्य ही आयोजित होती है लेकिन एक साथ जितनी लीलाएँ नटराज की क्रीड़ाभूमि वाराणसी में होती है उतनी भारत में अन्यत्र कहीं नहीं। इस दृष्टि से काशी इस दिशा में नेतृत्व करती प्रतीत होती है। राजस्थान और मालवा आदि भूभागों में यह चौत्रमास में ससमारोह संपन्न होती है। वीर, करुण, अद्भुत, शृंगार आदि रसों से आप्लावित रामलीला अपना रंगमंच संकीर्ण नहीं वरन् उन्मुक्त, विराट, प्रशस्त स्वीकार करती है। कहीं भी किसी मैदान में बाँसों, रस्सियों तारों आदि से घेरकर रंगमंच और प्रेक्षागृह का सहज ही निर्माण कर लिया जाता है।हमारे जनपद शाहजहांपुर में भी अनेक जगहों पर लीला मंचन होता है,जिसमे सुप्रसिद्ध ओसीएफ की रामलीला है।यह रामलीलाएं जीवंत है,यह बताती है कि भाई,माता,पिता,पुत्र के कर्तव्य क्या है और मंथरा कैसे परिवार तोड़ सकती है जिसके वशीभूत स्वयं ककैयी को दुख उठाने पड़े।यह बताती है कि अहम के वशीभूत कैसे महा प्रकर्मी रावण का भी पतन हो सकता है।राम,भारत के आधार है वही राजा है और वही निराकार ब्रह्म अवतारी।उनका नाम हमारा जीवन बी है,मिलने पर राम राम से बाल लला और मृत्यु तक राम नाम सत्य का उच्चारण ही भारत का सत्य है।जो राम सर्वयापी है,संस्कृत भाषा में 'राम' शब्द की निष्पत्ति रम् धातु से हुई बताई जाती है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है सुहावना, हर्षजनक, आनंददायक, प्रिय और मनोहर आदि। आस्थावानों के लिए दीन बंधु दीनानाथ श्रीराम का नाम सुखदायी है, दुखों को दूर करने वाला है और पापों का शमन करने वाला है। कलियुग में उदारमना श्रीराम के नाम का प्रताप आम जनों के लिए अभी भी जीवन के लिए एक बड़े आधार का काम करता है। भक्तों के लिए भव-भय से पार ले जाने वाले श्रीराम सगुण ईश्वर हैं और जाने कितनों का अपने पारस स्पर्श से उद्धार किया।

पौराणिक कथा की मानें तो विष्णु के सातवें अवतार श्रीराम अयोध्या में राजा दशरथ और माता कौशल्या के पुत्र के रूप में अवतरित हुए। श्रीराम की कथा एक ऐसा सांस्कृतिक प्रतिमान बन गई जो पूर्णता की पराकाष्ठा बन लोक-समादृत हुई। श्रीराम मानवीय आचरण, जीवन-मूल्य और आत्म-बल के मानदंड बन गए ऐसे कि उन्हें 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के रूप में स्वीकार किया गया। आज भारतीय समाज और संस्कृति में श्रीराम की अनिवार्य उपस्थिति कुछ ऐसे ही है जैसे जीने के लिए जल, अन्न और वायु हैं। ये सभी धरती पर जीवन के पर्याय हैं और उसी तरह श्रीराम भक्तों के जीवन स्रोत हैं । मानुष लीला में श्रीराम अन्याय, असत्य और हिंसा का प्रतिरोध करते हुए धर्म के प्रति समर्पित छवि वाले एक ऐसे अनोखे व्यक्तित्व को रचते हैं जो जीवन में बार-बार निजी-हित और लोक-हित के बीच चुनाव के द्वंद्व की चुनौती वाली विकट परिस्थितियों का सामना करता है। उनके जीवन के घटना क्रम को देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि तात्कालिक आकर्षणों और प्रलोभनों को किनारे करते हुए वह व्यक्तित्व धर्म मार्ग पर अडिग रहते हुए हर कसौटी पर बेदाग और खरा उतरता है। व्यापक लोकहित या समष्टि का कल्याण ऐसा लक्ष्य साबित होता है कि उसके आगे सब कुछ छोटा पड़ जाता है। राज-धर्म का निर्वाह करते हुए श्रीराम एक मानक स्थापित करते हैं और रामराज्य कल्याणकारी राज्य व्यवस्था का आदर्श बन गया। महात्मा गांधी भी राम-राज्य के विचार से अभिभूत थे। आज भी भारत की जनता अपने राज नेताओं से ऐसे ही चरित्र को ढूँढती है जो लोक कल्याण के प्रति समर्पित हो। छल-छद्म वाले नेताओं की भीड़ में लोग दृढ़ और जनहित को समर्पित नेतृत्व की तलाश कर रहे हैं। ऐसे राम और लीलाएं समाज का कल्याण करें,इसी प्रार्थना के साथ,जय सिया राम!!!!

/ सम्पादकीय /

इजरायल-हमास युद्ध, निर्दोष लोगों की मौत, चिंता का विषय

इजराइल हमास के बीच चल रहा युद्ध को करीब एक महीना होने जा रहा है लेकिन अभी तक किसी भी छोड़ से इस युद्ध के समाप्त होने की कोई बात सामने नहीं आ रही है। यह युद्ध कहां जाकर रूकेगा इसके बारे में कोई नहीं जानता। यहां तक कि युद्ध में आमने सामने खड़े इजराइल की सेना और हमास की लड़ाके भी युद्ध के अंत के बारे में नहीं जानते। बता दें कि इजराइली सीमा में घुस कर हमास ने जो हमला किया था, उसने स्वाभाविक ही सभी लोगों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया था कि आतंकवाद की शायद कोई सीमा नहीं है। इस युद्ध में युद्ध के नियमों का खुला उल्लंघन भी किया जा रहा है। मानवीयता में विश्वास रखने वाला कोई भी व्यक्ति इस तरह के हमले का समर्थन नहीं कर सकता। लेकिन उसके बाद इस समूचे इलाके में शुरू हुए युद्ध ने अब जो शक्ल अख्तियार कर ली है, उसने समूची दुनिया के सामने चिंता पैदा कर दी है कि आखिर यह कहां जाकर रुकेगा।

हमास के हमले में बड़ी तादाद में इजराइली मारे गए थे। अब उसके प्रतिकार में इजराइल जिस तरह हमला जारी रखे हुए है, उसमें दावा यही किया जा रहा है कि निशाने पर हमास के आतंकवादी हैं, मगर हकीकत यह है कि गाजा पट्टी में लगातार बमबारी की वजह से बड़े पैमाने पर आम नागरिक मारे जा रहे हैं। सवाल है कि क्या युद्ध के दौरान देशों के लिए बने अंतरराष्ट्रीय कानूनों और सीमाओं का ख्याल रखना किसी पक्ष के लिए जरूरी नहीं रह गया है! गौरतलब है कि इजराइल ने गाजा पट्टी पर लगातार हवाई हमलों के जरिए बमबारी कर रहा है। जिसमें हजारों लोगों की मौत हो चुकी है। हालांकि इजराइल का कहना है कि उसने हमास के ठिकानों पर हमले किए हैं, लेकिन सवाल है कि इतनी बड़ी तादाद में आम लोगों को शिकार बनाने से किसका और किस तरह का मकसद पूरा हो रहा है? हमास के हमले का जवाब देने के क्रम में फ्लिहाल इजराइल का जो तेवर दिख रहा है, उसमें शायद इस बात की फिक्र नहीं है कि युद्ध में किसको मारना है और किसे छोड़ना।

अब तक गाजा पट्टी में करीब छह हजार से ज्यादा आम नागरिकों की मौत की खबरें आ चुकी हैं। इनमें लगभग आधे नाबालिग या बच्चे थे। यह बेवजह नहीं है कि अब दुनिया भर में इस बात को लेकर गहरी चिंता पैदा हो रही है कि इन हमलों का सिरा आखिर कहां जाकर रुकेगा। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंतोनियो गुतारेस की यह व्यथा समझी जा सकती है कि गाजा में हो रहे अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का स्पष्ट उल्लंघन चिंताजनक है। किसी भी सैन्य संघर्ष में नागरिकों की सुरक्षा सर्वोपरि होती है। भारत ने भी संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में युद्ध की वजह से लगातार बिगड़ती स्थिति और संघर्ष में बड़े पैमाने पर आम नागरिकों की मौत को लेकर गहरी चिंता जताई। भारत ने सभी पक्षों से शांति के लिए आवश्यक परिस्थितियां बनाने, तनाव कम करने और हिंसा से बचने सहित सीधी बातचीत फिर से शुरू करने की दिशा में काम करने का आग्रह किया। लेकिन फ्लिहाल गाजा पट्टी में साधारण लोग बिजली, पानी की आपूर्ति बाधित किए जाने सहित व्यापक पैमाने पर इलाका खाली करने जैसे त्रासद हालात का सामना कर रहे हैं और इजराइली हवाई हमले में मारे जा रहे हैं, उसके प्रति चिंता जाहिर करना भी भारत सहित मानवता के प्रति सरोकार रखने वाले किसी भी देश की जिम्मेदारी है। विडंबना यह है कि हमास के हमले और उसके बाद शुरू हुए युद्ध में अंतरराष्ट्रीय कानूनों और युद्ध अपराधों का खयाल रखना भी जरूरी नहीं माना जा रहा है। नतीजतन, इसमें वैसे लोग मारे जा रहे हैं, जो युद्ध और आतंकवाद के लिए जिम्मेदार नहीं हैं और इससे उनका कोई वास्ता नहीं रहा!

एआई पर चिन्ता निराधार नहीं

डा. शिशिर शुक्ला
शाहजहांपुर

अभी कुछ दिन पूर्व नई दिल्ली में जी-20 देशों की संसद के अध्यक्षों के सम्मेलन पी-20 में सभी सदस्यों के द्वारा मानव अधिकारों के प्रति संवेदनशीलता जताते हुए वैश्विक स्तर पर काम काज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रयोग पर चिंता जताई गई। सम्मेलन में यह कहा गया कि एआई का उपयोग केवल विकास के लिए ही ठीक है। वास्तव में एआई को लेकर मस्तिष्क में चिंता का तूफान उठना नितांत स्वाभाविक है, क्योंकि एक तो आज का दौर धीरे-धीरे पूर्णतया कृत्रिमता के दौर का रूप लेने की ओर अग्रसर है और उसमें भी एआई तकनीक ने, जोकि संभवतरू कृत्रिमता के क्षेत्र में एक नई क्रांति है, हमारे जीवन को बुरी तरह प्रभावित करने की संभावनाओं में अभूतपूर्व वृद्धि कर दी है। यह मानव स्वभाव है कि हम स्वयं को सुविधाओं का जितना अधिक आदी बना देंगे, हमारा शरीर एवं मस्तिष्क उतना ही अधिक सुविधाओं की मांग और करेगा। हाल ही में हुए शोध के अनुसार एआई पर आधारित सॉफ्टवेयर चौट जीपीटी दुनिया के एक तेज तर्रार इंसान की तरह सोच सकता है। इसके अतिरिक्त चिकित्सा क्षेत्र में एआई सॉफ्टवेर न्यूट्रॉन के बारे में कहा गया है कि यह जीने व मरने की भविष्यवाणी करेगा। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि यदि ये सभी सुविधाएं हमें एक उत्कृष्ट स्तर पर मिलने लगीं, तो इस बात का क्या भरोसा है कि इस तकनीक का प्रयोग केवल और केवल मानव विकास एवं कल्याण हेतु ही किया जाएगा। यदि कुछ दशक पीछे लौट चलें तो हम पाएंगे कि इंटरनेट क्रांति अपने समय तक की सबसे बड़ी क्रांति थी। संभवतरू उस समय भी यही उम्मीद जगी होगी कि इंटरनेट का आविष्कार होने से मानव विकास एक नवीन स्तर को स्पर्श करेगा। किन्तु यदि आज की स्थिति पर गौर करें तो शायद ही कोई ऐसा दिन जाता हो जबकि इंटरनेट से जुड़े अपराधों एवं साइबर ठगी से संबंधित घटनाएं प्रकाश में न आती हों। कहने का तात्पर्य है कि जो तकनीक उम्मीदो एवं आशाओं की किरणों को लक्ष्य मानकर विकसित की गई थी, आज वही तकनीक हमारी चिंताओं का कारण बनकर हम पर भारी पड़ रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस वस्तुतः बहुत ही उच्च कोटि की एल्गोरिदम एवं प्रोग्रामिंग की सहायता से तैयार किए गए सॉफ्टवेयरों का समूह है जिनको यथोचित कमांड देने से हमारे जटिल से जटिल प्रश्न हल हो सकते हैं। यदि सकारात्मक पक्ष से देखा जाए तो निस्संदेह एआई तकनीक हमारे लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यह एक पूर्ण सत्य है कि किसी भी तकनीक का नकारात्मक पहलू हम स्वयं विकसित करते हैं, उदाहरण के लिए इंटरनेट को अपराध की दुनिया में घसीट लेना मानव के द्वारा ही उठाया गया एक मूर्खतापूर्ण कदम है।

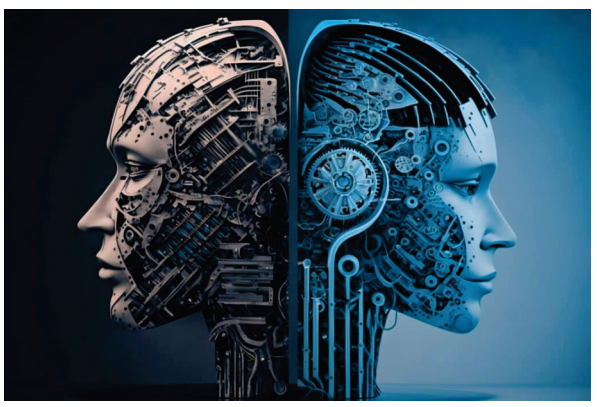

एक कहावत है कि, बेटा बेटा होता है और बाप बाप। यही कहावत एआई तकनीक के लिए भी लागू होती है, अर्थात कृत्रिम बुद्धिमत्ता चाहे कितनी भी प्रगति क्यों न कर ले किंतु यह मानव की प्राकृतिक तर्कक्षमता, विचारशीलता एवं सृजनात्मकता का स्थान कदापि नहीं ले सकती। किंतु चिंता का विषय यह नहीं है, चिंता तो इस बात की है कि यदि एआई आधारित सॉफ्टवेयर एवं टूल्स इसी तरह इस्तेमाल किए जाएंगे तो हमारी युवाशक्ति को मानसिक रूप से अपंग होने से कोई नहीं बचा पाएगा। आज प्रायः ऐसा होता है कि कक्षा में दिए गए होमवर्क अथवा असाइनमेंट का बोझ विद्यार्थी अपने मस्तिष्क पर न डालकर चौट जीपीटी जैसे सॉफ्टवेयर की मदद से उन्हें हल करता है। संभव है कि ऐसा करने से थोड़े समय की बचत हो जाए, किंतु लगातार ऐसा करना विद्यार्थी को उस मानसिक स्थिति की ओर धकेल सकता है जबकि वह किसी भी समस्या अथवा चुनौती के निराकरण हेतु मानसिक रूप से अपने आप को तैयार नहीं कर पाएगा। निस्संदेह एआई तकनीक शिक्षा, चिकित्सा, रक्षा, कृषि एवं प्रौद्योगिकी के लिए एक ब्रह्मास्त्र की तरह है किंतु हमें इस ब्रह्मास्त्र का प्रयोग विकास के लिए करना चाहिए न कि विनाश के लिए। यह तभी संभव होगा जब कहीं न कहीं हम एआई को नियमों व कानूनों के दायरे में बांध दें। सर्वप्रथम तो स्कूली बच्चों व कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए एआई के प्रयोग को पूर्णरूपेण सीमित कर देना चाहिए, ताकि वे अपने किसी भी तरह के शैक्षिक कार्य में एआई की सहायता न लें। युवाशक्ति हेतु ऐसे काउंसलिंग कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए जिससे कि वे एआई के न्यूनतम उपयोग हेतु अभिप्रेरित हों। इसके अतिरिक्त साफ्टवेयर कंपनियों को भी अनावश्यक फीचर उपलब्ध कराने पर रोक लगाते हुए नियंत्रणपूर्वक कदम उठाना चाहिए। इतना निश्चित है कि बिना बंधनों एवं नियमों को लागू किए, एआई को विनाश के दायरे में जाने से रोक पाना नामुमकिन है।

भारत-अमेरिका के बीच बढ़ते व्यापारिक सम्बन्ध

किशन भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर हर क्षेत्र में चुनौतियों का दायरा बढ़ता जा रहा है क्योंकि इसकी वजह रूस यूक्रेन युद्ध की बढ़ती लंबी अवधि हमास-इजरायल युद्ध में अरब देशों और पश्चिमी देशों की बढ़ती खाई, बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग, बढ़ती वैश्विक गुटबंदी, बिगड़ी वैश्विक अर्थव्यवस्था, बढ़ती महंगाई इत्यादि अनेक चुनौतियां बढ़ती जा रही है। जहां एक और कोरोना महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं की कमर तोड़ी वहीं अब दूसरी ओर बढ़ते युद्ध के ट्रेड से तैलीय पदार्थ और आयात निर्यात में बाधा, बढ़ती महंगाई के डंक उन पीड़ित देश के नागरिक झेल रहे हैं, परंतु युद्ध पर नकेल कसकर शांति की नींव डालने कोई देश सामने नहीं आ रहा है,मिस्त्र की राजधानी काहिरा में परसों युद्ध शांति सम्मेलन भी बेनतीजा रहा। इधर भारत अमेरिका के बीच बढ़ती नजदीकियों से दुनियां को उम्मीद जगी है कि भारत अमेरिका दोनों मिलकर ही वैश्विक समस्याओं का समाधान निकाल सकते हैं,क्योंकि अनेक क्षेत्रों में भारत अमेरिका रणनीतिक साझेदार हैं और अभी 22 अक्टूबर 2023 को जारी एक रिपोर्ट के अनुसार चालू वित्त वर्ष 2023 -24 की पहली छमाही में अमेरिका भारत का सबसे बड़ा भागीदार बनकर उभरा है तो वहीं 9 1० नवंबर 2023 को दोनों देशों के बीच टू प्लस टू मीटिंग होने की संभावना जताई जा रही है, हालांकि अभी आधिकारिक तौर पर इसकी पुष्टि की घोषणा नहीं हुई है। चूंकि भारत अमेरिका की नजदीकियां तेजी के साथ प्रगाड़ होती जा रही है, वैश्विक चुनौतियों के बावजूद अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बना रहेगा।

चालू वित्त वर्ष 2023-24 कीपहली छमाही में अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार होने की करें तो,वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं और घटते निर्यात एवं आयात के बावजूद अमेरिका चालू वित्त वर्ष 2023-24 की पहली छमाही में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बनकर उभरा है। सरकारी आंकड़ों में यह बात सामने आई है। वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल-सितंबर, 2023 में भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय व्यापार 11.3 फीसदी घटकर 59.67 अरब डॉलर रह गया है। यह पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 67.28 अरब डॉलर था। अप्रैल-सितंबर, 2023 में अमेरिका को निर्यात घटकर 38.28 अरब डॉलर हो गया, जो इससे पिछले साल समान अवधि में 41.49 अरब डॉलर था।अमेरिका से आयात भी घटकर 21.39 अरब डॉलर रह गया, जो पिछले साल की समान अवधि में 25.79 अरब डॉलर था एक्सपर्ट्स का मानना है कि वैश्विक मांग में कमजोरी के कारण भारत और अमेरिका के बीच निर्यात तथा आयात में गिरावट आ रही है, लेकिन व्यापार वृद्धि जल्द सकारात्मक हो जाएगी। उन्होंने कहा कि इसके बावजूद आने वाले वर्षों में अमेरिका के साथ द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने का रुझान जारी रहेगा, क्योंकि भारत और अमेरिका आर्थिक संबंधों को और मजबूत करने की कोशिश कर रहे हैं। इसी तरह, भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार भी 3.56 फीसदी घटकर 58.11 अरब डॉलर रह गया। चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में चीन को निर्यात मामूली रूप से घटकर 7.74 अरब डॉलर रह गया, जो एक साल पहले समान अवधि में 7.84 अरब डॉलर था। चीन से आयात भी घटकर 5०.47 अरब डॉलर पर आ गया, जो पिछले साल समान अवधि में 52.42 अरब डॉलर था। अमेरिका ने व्यापार में चीन को छोड़ा पीछे, पहली छमाही में बना भारत का पार्टनर नंबर-वन। भारतीय उद्योग परिसंघ की निर्यात व आयात (एक्जिम) पर राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष ने पहले कहा था भारतीय निर्यातकों को अमेरिका द्वारा सामान्य तरजीह प्रणाली (जीएसपी) लाभ की बहाली के लिए शीघ्र समाधान समय की मांग है। क्योंकि इससे द्विपक्षीय व्यापार को और बढ़ावा मिलने में मदद मिलेगी। मुंबई स्थित एक निर्यातक ने कहा कि रुझान के अनुसार वैश्विक चुनौतियों के बावजूद अमेरिका, भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बना रहेगा। लुधियाना के

एक निर्यातक ने कहा कि आने वाले वर्षों में भारत और अमेरिका के बीच व्यापार लगातार बढ़ेगा। सरकारी आंकड़ों से पता चलता है कि भारत और अमेरिका के बीच निर्यात और आयात की संख्या में गिरावट आई है। हालाँकि, इसी अवधि के दौरान भारत और चीन के बीच व्यापार में गिरावट आई। अंतिम डेटा से पता चलता है कि इस अवधि के दौरान अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।

भारत अमेरिका टू प्लस टू बैठक आयोजित करने की बात करें तो भारत और अमेरिका 9 -1० नवंबर के आसपास नई दिल्ली में 22 बैठक आयोजित करने वाले हैं। अमेरिकी रक्षा सचिव और विदेश मंत्री, राष्ट्रीय राजधानी में विदेश मंत्री और रक्षा मंत्री से मुलाकात करने वाले हैं। 22 मंत्रिस्तरीय संवाद एक राजनयिक शिखर सम्मेलन है जो 2018 में शुरू हुई थी। मीडिया सूत्रों ने बताया कि बैठक के दौरान नेताओं के इजरायल हमास युद्ध के कारण मध्य पूर्व में उभरती स्थिति सहित वैश्विक और क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्दों पर चर्चा करने की उम्मीद है। 22 मंत्रिस्तरीय संवाद एक राजनयिक शिखर सम्मेलन है, जो 2018 में शुरू हुई थी और हर साल शुरू में विदेश मंत्री और भारत के रक्षा मंत्री के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्य सचिव और रक्षा सचिव के बीच चर्चा के लिए आयोजित किया जाता है। सूत्रों ने कहा कि भारत और अमेरिका अपने रणनीतिक संबंधों को और मजबूत करने के लिए ये वार्ताएं कर रही हैं और यह इन वार्ताओं का पांचवां संस्करण होगा। बैठक में यूरोप में चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध के साथ-साथ क्षेत्र पर इसके असर पर भी चर्चा होने की उम्मीद है। बैठक में भारतीय-अमेरिकी नेताओं के बीच इस्राइल-हमास युद्ध के कारण सामने आए हालातों पर चर्चा की जाएगी। इसके अलावा युद्ध के चलते पश्चिम एशिया में पैदा हुए हालातों के साथ-साथ वैश्विक और क्षेत्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर भी चर्चा की जाएगी।

भारत अमेरिका की दोस्ती 1०० सालों से अधिक समय तक टिकी रहने के कयासों की करें तो, अमेरिकन फाइनेंसर और इन्वेस्टमेंट बैंकर ने भारत के सरकारी बॉन्ड्स को अपने बेंचमार्क इमर्जिंग-मार्केट इंडेक्स में शामिल किया है। इससे भारत के लिए उधार लेने की लागत घटेगी और घरेलू डेट मार्केट में करीब 3० अरब डॉलर का निवेश आने की संभावना है। इस बीच कंपनी के चेयरमैन और चीफ का कहना है कि भारत और अमेरिका बेस्ट नेचुरल पार्टनर हैं और उनकी दोस्ती अगले 1०० साल तक टिकी रहने वाली है। उन्होंने कहा कि अमेरिका और चीन के बीच तनाव बढ़ता जा रहा है। ऐसे में अमेरिका और भारत के पास अपनी दोस्ती को अगले लेवल पर ले जाने का बेहतरीन मौका है। उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा कि सप्लाई कारणों से कई कंपनियां चीन से हट रही हैं। यह भारत के लिए अच्छा मौका है। साथ ही भारत ने भी कई मोर्चों पर अच्छा काम किया है। इनमें आधार, जीएसटी सुधार और इन्फ्रास्ट्रक्चर पर खर्च शामिल है। इसके साथ ही भारत एक लोकतांत्रिक देश है। यहां के लोग गजब के उद्यमी हैं और साथ ही यहां टेक्नोलॉजी भी है। चीन के पास डेमोक्रेसी नहीं थी, इसलिए वहां तेज काम हुआ। लेकिन वहां की अपनी समस्याएं हैं। आज भारत जहां है, वहां चीन 15-2० साल पहले था। उन्होंने शुरुआत करने में ही लंबा रास्ता तय करना पड़ा था। उन्होंने कहा कि अमेरिका की इकॉनमी अभी ठीक चल रही है और भारत दुनियां में सबसे तेजी से बढ़ रही इकॉनमी है।अमेरिका पर पहले ही बहुत कर्ज चढ़ चुका है। यूक्रेन युद्ध की वजह से महंगाई बेतहाशा बढ़ गई है। साथ ही अमेरिका और चीन के बीच भी तनाव बढ़ रहा है। यह भारत और अमेरिका के लिए बहुत बड़ा मौका है। अमेरिका ने व्यापार में चीन को पीछे छोड़, पहली छमाही में बना भारत का पार्टनर नंबर-वन।चालू वित्त वर्ष 2023-24 की पहली छमाही में अमेरिका भारतका सबसे बड़ाभागीदार बनकर उभरादुनियां में हो रही वैश्विक उथल-पुथल के बीच भारत अमेरिका 9-1० नवंबर 2023 को टू प्लस टू मीटिंग होने की संभावना वैश्विक चुनौतियों के बावजूद अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बना रहेगा।

आदर्श बहू

लघुकथा

शीला श्रीवास्तव
इंदौर

मीना अपने मोहल्ले में आदर्श बहू के नाम से प्रसिद्ध थी। घर-घर में मीना के उदाहरण प्रस्तुत किया जाते थे कि बहू हो तो मीना जैसी, जो अपनी सास की सेवा के लिए एक पैर पर हमेशा खड़ी रहती है।

एक दिन सरिता जी मोहल्ले में ही किसी के घर पूजा में जा रही थी कि रास्ते में उनकी मुलाकात मीना से हो गई। मीना अपने घर के सामने ही ठेले से सब्जी खरीद रही थी। मीना को देखते ही सरिता जी शिकायत भरी लहजे में उससे बोली 'क्यूं री मीना, तुझे इतनी भी फुर्सत नहीं कि मेरे पोते की पहली वर्षगांठ पर आ सके, 'आप तो जानती ही हैं आंटी जी कि मेरी सास की तबीयत ठीक नहीं रहती, इसलिए कहीं बाहर निकलना नहीं हो पाता।' मीना ने अपनी असमर्थता जताई। 'सच! तुम्हारी सास बड़ी नसीबदार है जो उसे तुझ जैसी बहू मिली है।' सरिता जी प्रशंसनीय नजरों से मीना को देखते हुए बोली, 'सच कहूं तो आंटी, सास की सेवा करना मेरी मजबूरी है। मेरे पति की आमदनी कम है उससे दाल रोटी चल जाए तो बहुत है। ये जो घर में शानोशौकत देख रही है, वो सब मां जी के मोटी पेंशन के बदौलत है।' मीना सकुंचाते हुए बोली। मीना की बात सुनकर सरिता जी का मुंह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया। कल तक मीना की जो आदर्श बहू की छवि उनके मन में अंकित थी, अब वो धुमिल हो गई।

इलेक्शन

लघुकथा

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
बालोद (छत्तीसगढ़)

आज शहर के रेड लाइट एरिया में उनका आना हुआ। दरवाजे पर खड़ी एक अधेड़ औरत को देख कुकरेजा जी हाथ जोड़ते हुए बोले- 'बहन जी ! इलेक्शन में खड़ा हूँ। इस बार मुझे शहर की सेवा करने का अवसर दीजिएगा। समाज सेवा की बड़ी चाहत है,जो आपके आशीष के बगैर सम्भव नहीं है।' स्वयं को समाजसेवी समझने वाले कुकरेजा जी के साथ उनके दो-चार सेवक भी थे।

कुकरेजा जी की बात सुन अधेड़ औरत जरा मुस्कुराई‌य फिर मन में बात चली- 'साला ! हरामी ! दलबदलू कहीं का। जो अपनी पार्टी का न हो सका समाज का क्या होगा ?' वह औरत चाहते हुए भी कुछ न बोली। फिर कुकरेजा जी इधर-उधर ताकने लगे, और जैसे ही उस अधेड़ औरत को नोट की एक गड्डी थमाने लगे, अधेड़ औरत ने कहा- 'कुकरेजा जी, कांतीबाई हूँ मैं, कांतीबाई। मैं ईमान वाला जिस्म-जिगर रखती हूँ। इसे आप ही रखें।' कुकरेजा जी के मुड़ते ही कांतीबाई ने फटाक से दरवाजा बंद कर लिया।

राधा

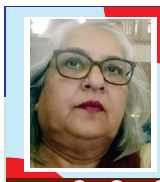

जयश्री बीरमी
अहमदाबाद

कृष्ण के प्यार में बचपन से रची बसी थी राधा।खेलते खेलते अपना सर्वस्व मान चुकी थी राधा। उसकी मुरली की धुन के पीछे नाचती जुमती थी राधा। राधा का भी स्थान किशन के अंतरमन में था।दोनों का दिव्य प्रेम था जो किसी भी प्रेम कहानी से उत्कृष्ट हैं, हम आज भी जब राधा किशन के प्रेम के गीत(भजन) गातें हैं तो सदृश् उन्हे देख पाते हैं,अनुभव कर पाते हैं। त्याग ही इस प्रेम की नीव हैं जो कर्तव्य के सामने समर्पित हो प्रीतम से बिछड़ ने के लिए तैयार हो गया था। कृष्ण से बिछड़ कर राधा आधी रह गईं फिर भी मथुरा जाने से रोक नहीं पाई।मधुबन,ग्वाल,गोपियां, गायें,और नंद यशोदा सभी तो विरह में बेहाल थे किंतु ये प्रेम की जीत ही थी जो बिछड़ के भी कभी बिछड़ नहीं पाएं। नहीं राधारानी ने विरह के गीत गा कर कृष्ण के मनोबल को तोड़ा और कर्तव्य से मुख मोड़ने के लिए विवश किया,सच्चे प्रेम की पराकाष्ठा भी तो यही होती हैं। कृष्ण भी जानते थे उनके विरह में पूरा गोकुल व्याकुल हो जायेगा फिर भी अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक कृष्ण सब कुछ जानते हुए भी ,शायद दिल पर पत्थर रख मथुरा गए और जो मुरली राधा के लिए बजाया करते थे उसे अपने अलग कर लिया। युगपुरुष ने जिस कार्य के लिए जन्म लिया था उसे पूर्ण करने सोलहकलासम्पूर्ण भगवान विष्णु के अवतार ने त्याग दिया था अपना बचपन और बचपन का प्यार। यही तो हैं सम्पूर्ण प्यार की इन्तहा। यहां न ही कोई विरह के गीत गाएं, न ही कोई मरने निकला, न ही किसी ने मिलने के लिए बगावत की। कोई कैसे समझे कि प्यार किसे कहते हैं।

कभी-कभी मन

कभी-कभी मन
कर देता है इनकार
खुद को संभालने से
ना अपने घाव दिखता है
ना करवाता है मलहम पट्टी

कभी-कभी मन
एक ब्लैक होल हो जाता है
अपनी सारी रोशनी को
अंधेरों में गुम कर देता है
और खो जाता है खुद भी

कभी-कभी मन
चाहता है जोर-जोर से रोना
आंसुओं संग अपना दर्द बहाना
लेकिन आंसू आंखों में ही
सूख जाते हैं बहते कहां

कभी-कभी मन
सोचता है कह दूं सब कुछ
चिल्ला कर बोल कर बता दूं
निकाल लूं सादी सारी भड़ास
लेकिन घुट जाती है आवाज

कभी-कभी मन
ना जीता है ना मरता है
खुद ही खुद से लड़ता है
होंठ सिले मुस्कुराते हुए
खुद को समेटे एक कदम और चल पड़ता है
कभी-कभी मन

स्मिता
बोकारो, झारखण्ड

धान के महिमा

पींयर-पींयर धनहा बाली।
बिहना पड़थे सूरज लाली॥

घाम अगासा के वो सहिथे।
धान सोन कस चमकत रहिथे॥

चिरई-चिरगुन गाना गाथे।
घेरी-बेरी खेत म जाथे॥

पक्का-पक्का बीजा पाथे।
फेर-फेर के जम्मों खाथे॥

किसम-किसम के धान ल बोथे।
अब्बड़ पैदावार ह होथे॥

चारों मुड़ा सुघर ममहाथे।
देख किसनहा खुश हो जाथे॥

धरती के कोरा हरियाथे।
सुख के चरा कस लहराथे॥

प्रिया देवांगन 'प्रियू'
गरियाबंद छत्तीसगढ़

यह जो कलियां खिल कर ना महकती
तो फूलों पर भंवरे ना मंडराते
यह जो काली घटाएं ना बरसाती
तो सावन सुहाने ना होते
यह जो दोस्ती बचपन की ना होती
तो सब रिश्ते से बढ़कर ना होते
यह जो दर्द ना होते
तो इन आंखों से आंसू न छलकते
यह जो किसी के लिए फिक्र ना होते
तो इस दुनिया में अपने कोई ना होते

रीतू चौरसिया
नई दिल्ली

क्या पता

क्या पता अब कौन सा आए नया संकट
सभी चेहरों पर जड़ी है एक झल्लाहट

हो गए सम्बन्ध सारे,
आज क्रय-विक्रय।
फिर भला मुझको यहाँ पर,
कौन दे आश्रय।

देखना है ऊँट बैठे आज किस करवट।

हैं स्वयं से ही यहाँ,
सब लोग आतंकित।
द्वेष कि केवल,
सभी के पास है संचित।

साफखतरे की सुनाई दे रही आहट।

साथ चलना था जिन्हें,
वो दे गए झाँसा।
मैं नदी तक पहुँचकर भी,
रह गया प्यासा।

व्यर्थ में अब कौन पाले प्यार का झंझट।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'
शाहजहांपुर

बंजर जंमी पे पौधा नहीं उगता

जहां भू-भाग बंजर हो वहां पौधा नहीं उगता।
हवा के संग में उड़ता पत्ता अच्छा नहीं लगता।।

जो सूखे पेड़ दिखते है कभी ये मुस्कुराते थे,
ये पतझड़ का जो मौसम है अच्छा नहीं लगता।

अंधेरी रात में तारों को एकटक देखते रहना,
सुबह सूरज का आना कभी अच्छा नहीं लगता।

बड़ा ही दर्द देता है जुदाई का समय प्यारों,
किसी को छोड़कर जाना अच्छा नहीं लगता।

मौत जीवन का हिस्सा है न जाने कब आ जाये,
खुदा पे बेवजह इल्जाम लगाना अच्छा नहीं लगता।

प्रभात गौर
प्रयागराज

एक ब्रांड बन चुका है डॉ इन्दु 'अजनबी' का संचालन...

सुशील दीक्षित 'विचित्र'
शाहजहांपुर

शख्सियत

कवि डॉ इन्दु अजनबी के संचालन की खूबियां, उसकी रवानगी और अपनी बात रखने का अंदाज अनूठा है। फिर भी मित्रों मैं इस श्रृंखला के महत्वपूर्ण किरदार डॉ इन्दु 'अजनबी' पर लिखने से पहले मेरे सामने असमंजस की स्थिति यह है कि मैं बात कहाँ से शुरू करूं। वहां से जब वह मेरे लिए भी अजनबी थे या वहां से जब वे मैं उन्हें जानने लगा या वहां से जब वे मेरे लिए 'अजनबी' नहीं रहे। एक बहुत लम्बे अंतराल की बात है जब मैं उन्हें जानता नहीं था और वे सही माने में मेरे लिए अंजान थे। एक नाम भर थे 'अजनबी'। शायद यह तब की बात हैं जब पिछली सदी दम तोड़ रही थी उन दिनों अखबार वाले अधिक सेंसटिव और भावुक होते थे। छोटे छोटे सांस्कृतिक, साहित्यिक आयोजनों को भी प्रमुखता से छापते थे। उन्हीं दिनों युवक विरादरी के कार्यक्रम होते थे जिनकी कवरेज मैं आदतन अखबारों में पढ़ता था। उन दिनों मैं भी हिन्दुस्तान अखबार का संवाददाता हुआ करता था लगभग सभी अखबारों में पढता था कि इन्दु 'अजनबी' ने युवक बिरादरी के कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ तारा पाठक के यहां सालाना होने वाली गोष्ठी में उनसे मुलाकात हुई। वे प्रवाह के सदस्य बने। हम लोग संचालन को बोर काम समझते हैं। चूँकि इन्दु 'अजनबी' संचालन करते रहे हैं इसलिए यह बोर, हम मित्रों की नजर में अनावश्यक काम को 'अजनबी' पर डाल दिया गया। हम लोग कहते थे कि नाम भर ही तो बुलाना है। कौन सा टेक्निकल काम है। लेकिन नहीं साहब। 'अजनबी' ने मेरी समझ में इस बेहूदा काम में, हमारे हमसफर मित्रों की नजर में इस अनावश्यक काम में ऐसे ऐसे फुदने लगाये, ऐसे ऐसे पेंच फिट किये, ऐसे ऐसे नगीने जड़े की हम लोग भौचक्के रह गये। हैरान रह गये। 'अजनबी' ने इस बोर काम को ऊंचाई पर, इतनी ऊंचाई पर ले जा कर टांग दिया जिस तक पहुँचने में लोगों को सदियां लग जायेंगी। ऐसी बेजोड़ कला बना दिया कि वे श्लाघा से श्लाघनीय तक जा पहुंचे। वंदना से वंदनीय तक का सफर किया। यह सब इसलिए उल्लेखनीय नहीं है बल्कि इसलिए भी रेखांकित किया जाता है कि 'अजनबी' ने संचालन और कविता के बीच में जो संतुलन बनाया है वह केवल उनके ही बस की बात

है। अलबत्ता धीरे धीरे उन्होंने अपनी कला को और धार दी, और सान पर चढ़ाया, और खरादा, उसमें नये नए सलमा सितारे लगाए कि संचालन और वे एकाकार हो गये। उनके संचालन की सुगन्ध एक दिन देश की भी सीमाएं लांघ गयी। उन्होंने काठमांडू में वृहत्तर कार्यक्रम का संचालन करके अपने झंडे गाड़ दिये। वे कब एक ब्रांड बन गए शायद यह वे भी नहीं जान पाये। राष्ट्रीय से अंतर्राष्ट्रीय संचालक होने का भी तमगा उनके सीने पर टंग गया। 'अजनबी' के संचालन की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे समय को पहचानते हैं और समय के अनुसार ही अपनी बात कहते हैं। एक आयोजन सिरे नहीं चढ़ रहा था। सहसा 'अजनबी' ने संचालन का ट्रैक बदला, अंदाज बदला। कार्यक्रम ही बदल गया। ऐसी करामात उन्होंने एक दो बार नहीं की बल्कि दर्जनों बार शब्दों के डंडे से संचालन के चाक को इस कुशलता से घुमाया कि उससे बहुत खूबसूरत स्वत: ही गढ़ गया। कोरोना काल में जनसेवा करते समय खुद भी चपेट में आ गए लेकिन उस नामुराद रोग को झाड़ कर जिस कुशलता से निकल आये वह भी उनकी जिजीविषा और आत्मबल को दिखाती हैं और आत्मबल, आत्मविश्वास किसी भी संचालक की सफलता की पहली शर्त हैं। जब वे संचालन के बीच बीच में मुक्तक, शेर, छंद पिरोते हैं तो ऐसा लगता है कि गुलाबों की माला के बीच बीच में कमल पिरो दिये गये हों। अब तो स्थिति यह है कि उनका होना कार्यक्रम का सफल होना एक जैसी बात हो गई। यह दोहराना पिष्टपेषण होगा कि कौन से कार्यक्रम को उन्होंने कैसे सुंदर आगाज से खूबसूरत अंजाम तक पहुंचाया अलबत्ता यह कहना मैं जरूरी समझता हूँ कि 'अजनबी' की प्रयोगधर्मिता अनुपम है और वे इसी के माध्यम से संचालन में नए नए प्रयोग करते हैं। ऐसे ऐसे प्रयोग जो किसी की सोंच से भी परे होते हैं। उनमें अनंत सम्भावनाये हैं और मैं जानता हूँ कि वे अभी बहुत बुलंदियां छुयेंगे ही नहीं उन्हें आत्मसात भी कर लेंगे। कोई बड़ी बात नहीं कि वे एक दिन देश के सर्वोत्तम संचालक बन जायें।

हम आप और रसोई

रेसिपी

गेहूँ के लड्डू

लड्डु या लड्डु गोलाकार आकार की भारतीय मिठाइयाँ हैं। वे आम तौर पर आटे, वसा और एक स्वीटनर (चीनी, गुड़, गाढ़ा दूध, आदि) से बनाए जाते हैं। सर्दियों के ठंड के मौसम में, कुछ स्वास्थ्यवर्धक मिठाइयाँ खाना बहुत अच्छा होता है जो आपको ऊर्जावान और गर्म रखती हैं। आज हम आपको गेहूं के आटे और ढेर सारे स्वस्थ बीजों, सूखे मेवों और गुड़ से बने सुपर स्वास्थ्यवर्धक और स्वादिष्ट लड्डु बनाने की विधि के बारे में बताएंगे। गेहूं के लड्डु के लिए फॉक्स नट्स, अलसी के बीज, कद्दू के बीज, सूरजमुखी के बीज, बादाम, काजू, घी और गुड़ का इस्तेमाल किया। अलसी के बीज पौधे-आधारित प्रोटीन से

भरपूर होते हैं, और फॉक्स नट्स में प्राकृतिक सूजन-रोधी गुण होते हैं। मैग्नीशियम, पोटेशियम और सोडियम के अलावा फॉक्सनट में कैल्शियम भी उच्च मात्रा में होता है। गुड़ न केवल इस लड्डु में मिठास जोड़ता है बल्कि साथ ही यह आयरन और फोलेट का भी एक बड़ा स्रोत है। इसके अलावा, नारियल फाइबर का एक बड़ा स्रोत है और विटामिन और खनिजों से भरपूर है। कद्दू के बीज एंटीऑक्सीडेंट और खनिजों से भरपूर होते हैं। इसमें फाइबर भी उच्च मात्रा में होता है।

सबरीना यास्मीन
रियाद, सऊदी अरब

नोट

1. ध्यान रखें कि गुड़ पिघल जाए। हमें बस गुड़ को पिघलाना है, मिश्रण को भुरभुरा बनाने के लिए पिघले हुए गुड़ को ज्यादा देर तक पकाने की जरूरत नहीं है।
2. एकदम कुरकुरी बनावट पाने के लिए पूरे गेहूं के मिश्रण को छानना बहुत जरूरी है। इसलिए कृपया इसे टालें नहीं।
3. अगर आपके पास सूखा नारियल है तो उसे कद्दूकस करके इस्तेमाल करें। ये सूखे नारियल से भी बेहतर स्वाद देते हैं।
4. इन लड्डुओं में अखरोट या कोई अन्य मेवा भी मिलाया जा सकता है।

विधि

सबसे पहले हम एक कप गेहूं का आटा लेंगे। आटे में 3 बड़े चम्मच घी डालिये और हाथ से अच्छी तरह मिला दीजिये। साथ ही मिश्रण में 1 बड़ा चम्मच दूध भी डाल कर मिला दीजिये। आटा गीला और भुरभुरा होना चाहिए। ध्यान दें कि आटा गूंथने के लिए पर्याप्त गीला नहीं होना चाहिए। हमें आटे को थोड़ा गीला करना है। यह लड्डु को नरम और अधिक स्वादिष्ट बनाने में मदद करेगा।

अब मिश्रण को अपनी उंगलियों से दबाएं और ढक्कन से ढक दें और आधे घंटे के लिए छोड़ दे। इस बीच, एक पैन को स्टोव पर रखें। 1 चम्मच घी में बादाम और काजू को हल्का सुनहरा होने तक भून लीजिए। भुने हुए मेवों को पतले और छोटे टुकड़ों में काट लीजिए ताकि हम इन्हें आसानी से लड्डु में मिला सकें। उसी पैन में मखाने को सूखा भून लें जब तक उनका रंग न बदल जाए। अगर यह आसानी से फट जाए तो इसे पैन से निकालकर एक डिश में रखें। इसके अलावा, अलसी और कद्दू के बीज को तब तक सूखा भून लें जब तक उनमें खुशबू न आ जाए और वे चटकने न लगें। मैंने खरबूजे के बीज नहीं भूने। उन्हें बाद में जोड़ा जाएगा। इसे मोर्टार और मूसल में डालें और बीज को दरदरा पीस लें। इसके अलावा, मखाने को मूसल की सहायता से दरदरा पीस लें। तो, अब सभी सूखे मेवे और बीज लड्डु में उपयोग करने के लिए तैयार हैं। अब आते हैं गेहूं के आटे पर तैयार गीला साबुत गेहूं का आटा लें और कांटे से फुला लें। एक चावल की छलनी (बड़े छिद्रों वाली) लें और पूरे गेहूं को छलनी से छान लें। इससे पूरे गेहूं के एक समान टुकड़े प्राप्त होंगे। चूल्हे के ऊपर एक भारी तले का पैन रखें जिसमें बचा हुआ घी डालें। घी में तैयार साबुत गेहूं के टुकड़े डालें और मध्यम-धीमी आंच पर भूनना शुरू करें। लगातार चलाते हुए सावधानी से तब तक भूनिए जब तक मिश्रण का रंग न बदल जाए और मिश्रण से अच्छी खुशबू न आने लगे। अब, जब पूरा गेहूं लगभग पक जाए, तो इसमें सूखा नारियल और अन्य सभी तैयार मेवे और बीज डालें। अच्छी तरह मिलाएं और आंच से उतार लें। पैन को पोंछें और फिर से स्टोव पर रख दें। इसमें 1 कप कसा हुआ गुड़ और 1/4 कप पानी डालें। मध्यम आंच पर तब तक पकाएं जब तक कि गुड़ पूरी तरह से पिघल न जाए और मिश्रण झागदार न हो जाए। ध्यान दें कि हमें सिर्फ गुड़ को पिघलाना है मिश्रण को भुरभुरा बनाने के लिए पिघले हुए गुड़ को ज्यादा देर तक पकाने की जरूरत नहीं है। पिघले हुए गुड़ को तैयार लड्डु मिश्रण में डालें। इसमें इलायची पाउडर और सोंठ पाउडर भी मिला दीजिये। जब मिश्रण थोड़ा ठंडा हो जाए तो उंगली और हथेली की मदद से छोटे-छोटे लड्डु बना लें।

सामग्री.....
गेहूं का आटा - 1 कप
घी 1/2 कप
दूध - 1 बड़ा चम्मच
मखाना- 1 कप
बादाम, काजू - 1/2 कप
अलसी के बीज - 1/4 कप
कद्दू के बीज - 1/4 कप
खरबूजे के बीज - 1/4 कप
सूखा नारियल - 1/4 कप
कसा हुआ गुड़ - 1 कप
इलायची पाउडर - 1 चम्मच
सोंठ पाउडर - 1 चम्मच

पीछे छूटते रिश्ते

भौतिकता का प्रहार है,
नवीन जोश और उत्साह नहीं मिलता यहां,
इस युग में अपार है।
यह अपने आप को दूर करता है,
सपनों को साकार करने में,
भौतिकता की राह पकड़ता है।
नफ़रत और सुकून साथ -साथ नहीं मिलता है,
भौतिकता से हमें कुछ हासिल नहीं हो सकता है।
आलीशान महल में रहने की,
ख्वाहिश रहतीं है।
पैसे और सोहरत को पाने में,
सब कसरत होती रहती है।
धन, ऐश्वर्य और वैभव इसके पीछे हम रहते हैं,
अपनत्व, विवेक और विश्वास से,
मतलब नहीं रखतें हैं।
भौतिकता से हमें रूबरू हुए पलों में,
केवल तकलीफही होती है,
सफ्लता और समृद्धि को,
इस युग में कुछ हासिल नहीं होने की गुंजाइश,
यहां दिखाई देती है।
रिश्ते नाते खत्म हो जाती है,
बस धन,दौलत और शोहरत पे,
गुफ्तगू की जाती है।
हमें आज सम्हलकर रहने की जरूरत है,
पीछे छूटते रिश्ते में,
प्यार और स्नेह की ममतामई मां की,
आज बढ गई अहमियत है।

डॉ अशोक, पटना

बेदम

सपना चन्द्रा
भागलपुर बिहार

बहुत दिनों से ऑफिस के चक्कर काट-काट हरे राम जी परेशान हो गए थे। बड़े बाबू के पद से सेवानिवृति के बाद परिवार के खर्च का बोझ पेशानी पर अक्सर चमक ही जाती। बेटे को आगे पढ़ाना, बेटी की शादी सब कुछ तो बाकी ही था। पेंशन की रकम चालू हो जाती तो बिटिया के लिए घर-वर ढुँढने निकलते। रोज-रोज ऑफिस के चक्कर लगाते देख चपरासी विनोद बोल पड़ा- 'बडा बाबू ये आपका समय नहीं है। कुछ ले-देकर अपना काम करवा लीजिए। आपका यूँ रोज-रोज परेशान होना अच्छा नहीं लगता।'

'विनोद !..मैंने हमेशा ईमानदारी से काम किया है और यही मेरी पहचान भी थी। लोग मेरे पास बड़ी उम्मीद से आते थे। मुझे क्या पता था कि एक दिन मुझे मेरे ही पैसों की खातिर तेल लगाने पड़ेगें।' 'बड़ा बाबू !.. मामला तेल का है और यह कितनी जरूरी चीज है ये आप-हम अच्छी तरह जानते हैं। एक-दूसरे की गाड़ी चलाने के लिए तेल लगाना ही पड़ता है। मँहगाई ने बेदम जो कर रखा है।' विनोद !.काश ! मैं भी इतनी गहराई से कभी सोचता तो इतना बेदम न होता।

करवा चौथ

करवा चौथ आता है प्रति वर्ष बारंबार
सुहागन नारी करती है इसका इंतजार
माथे पर बिंदिया, हाथो में चूड़ियाँ
पायल के साथ, पहनती है बिछिया
पूजा करती है पति के खातिर चांद की
करती हूँ आराधना बनी रहे मेरी जोड़ी
जैसी जोड़ी है चांद और चांदनी की
सौभाग्यशाली होती हैं जो करती हैं व्रत
क्योंकि श्रद्धा और विश्वास का
होता है करवा चौथ का पावन पर्व

स्नेह श्रीवास्तव इंदौर

पारिजात

तपती रेत सा प्राण,
ढूंढता एक ओस कण,
ठंडक नैनो की बन ,
जगमग हो जैसे,
भोर की सूर्य किरण।
दूर बहुत हो अगर मंजिल,
बन जाए रहगुजर,
देखकर विरान साँसे,
पवन बन, चुम ले लट लहर।
मन के आंगन में
महके, मन का चोर,
जैसे पारिजात सुमन।

राजश्री सिन्हा
बुल्गारिया

दीर्घायु

करवाचौथ पर विशेष

मीरा जैन उज्जैन

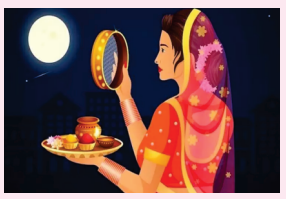

'उदास मत हो संजना ! सब ठीक हो जाएगा आज तूने करवा चौथ का व्रत रख पति के दीर्घायु होने की मंगल कामना की है देखना वे शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे' बुझे हुए स्वर में संजना ने कहा- 'नहीं रितु ! मैंने उनके नहीं बल्कि स्वयं के दीर्घायु होने की कामना की है' व्यंग्यात्मक लहजे में रितु ने पूछा-'ऐसा क्यों किया, तेरे पति इतने बीमार है क्या तुझे अपने सुहाग की जरा भी चिंता नहीं है?' संजना के दिल की बात जुबां पर आ गई - 'रितु ! मैं चाहती हूं जब तक उनकी जिंदगी है उन्हें कोई कष्ट ना हो यदि मैं उनसे पहले चली गई तो उनका जीना दूभर हो जाएगा और वे तिल तिल कर दम तोड़ देंगे क्योंकि मेरे बाद उनकी सेवा करने वाला कोई नहीं है' इतना कहते कहते हैं संजना का गला भर आया।

ढ़ेरो खुशियाँ माता लाई

स्कंदमाता जगत में आई ।
ढ़ेरो खुशियाँ माता लाई ।
कार्तिक की माता कहलाती।
माया ममता से बहलाती ॥

सुख समृद्धि हमको दे जाती।
मुखड़ा उनका हमें लुभाती ।
पद्मासन माँ सदा विराजे ।
मंगल गीत मँजीरा बाजे ॥

पत्नी शिव की माता रानी ।
इच्छा पूरी करती दानी ।
असुर संहार करती माता ।
देखों माता जग की दाता ॥

मिले वरदान करना पूजा ।
भाय नहीं अब कोई दूजा ।
करती माता सिंह सवारी ।
रूप मात की देखों न्यारी ॥

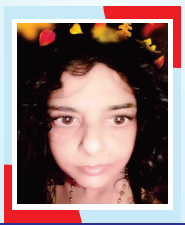

मिठु डे
पं. बंगाल

कंकरीट के जंगल

खपरेली दुनिया अब
जाने कहां गई?
कंकरीट के जंगल
सबको निगल रहे।
मौसम भी जाने क्यों
आंख तरेरे सा, पर्वत
और दिशाओं के
मन पिघल रहे।

लगता सब कुछ शीघ्र
बदलने वाला है।
पन्नों को इतिहास
पलटने वाला है।
कुछ चेहरे
फिर भीड़ से आगे,
निकल रहे।

सच्चाई क्यों स्वप्नभंग
सी लगती है।
अच्छाई भी मन ही मन,
बस घुटती है।
अपनों में रहकर भी,
फिर-फिर विकल रहे।

जिसको देखो वही,
घात में बैठा है।
संबंधों के नाम पे
केवल ऐंठा है।
आज पुरानी पीड़ाओं को,
धीर-धीरे उगल रहे।

पंकज मिश्रा 'अटल'
आसाम

खुशियों और त्योहारों का हैप्पीकरण

अयोध्या प्रसाद
लखनऊ

हमारी भाग दौड़ भरी जिंदगी में खुशी के अवसर और त्योहार समय समय पर हमारे जीवन में उत्साह, उमंग और रंग भरते रहते हैं, जैसे सरकारी कर्मचारियों को वेतन के साथ बीच में मिलने वाला बोनस या मंहगाई भत्ते का एरियर। ये हमें खुशहाल बनाने के लिए जीवन में आक्सीजन सी भूमिका निभाते हैं। त्योहारों या किसी खुशी के मौके पर बधाई देने की परम्परा हमारे यहां रही है, जिसका निर्वहन हम आज भी बड़ी शिद्दत से करते चले आ रहे हैं। जन्मदिन हो या मैरिज एनीवर्सिरी, कोई तीज दृ त्योहार या खुशी का कोई अन्य अवसर, हम बधाई देने की अपनी परम्परागत आदत का निर्वहन करने से नहीं चूकते और कोशिश रहती है कि बधाई देने का कोई भी मौका हाथ से जाने नहीं दें। ऐसे अवसरों पर जब तक हम बधाई नहीं दे देते, मन पर एक अनजाना सा बोझ बना रहता है। बधाई देने के बाद यह अदृष्य बोझ उतर जाता है और हमारे चित्त में हल्कापन महसूस होता है। कभी कभी बधाई देने में देर हो जाए तो बीलेटेड बधाई से काम चला लिया जाता है। बदलते समय के साथ बधाई देने की शैली में बदलाव आ गया। अब बधाई का हैप्पीकरण हो गया है। कोई भी खुशी का अवसर या त्योहार बधाई के लिए हैप्पीकरण की भेंट चढ़ गए। जन्मदिन की बधाई हैप्पी बर्थ डे ..... त्योहार हैप्पी होली.....हैप्पी दशहरा.....और हैप्पी दिवाली हो गए। बधाई शब्द को हैप्पीकरण में तब्दील कर हम अपने को अभिजात्य महसूस करने लगे। .....आपको अपना जन्मदिन भले ही न याद हो, फेसबुक आपके जन्मदिन को जगजाहिर कर देता है। आपको तो पता तब चलता है जब आपके साथ जुड़े इष्ट मित्र आपको हैप्पी बर्थडे के संदेश देने लगते हैं। हर्र लगे न फिटकरी और रंग चोखा ही चोखा। भौतिक रूप से मिलकर बधाई देने में समय, पैसा दोनों लगते हैं लेकिन आधुनिक तकनीकी ने यह सुविधा सहज ही उपलब्ध करा दी है। खुशी के किसी मौके को हैप्पीकरण के आवरण में लपेटिए, संदेश देने के साथ स्टोर से आइकान या मिष्ठान्न और फूलों का गुलदस्ता निकालिए और भेज दीजिए प्रियजन को। मिलावट की कोई गुंजाइश नहीं, न ही असली मिठाई खिलाकर शुगर बढ़ाने की शिकायत। भेजने वाला भी खुश, पाने वाला भी खुश !

खुश रहना हमारी विशेषता है और मजबूरी भी। खुश न रहें तो आखिर करें भी क्या। खुशियां सहज नहीं मिलतीं तो जीवन की छोटी छोटी कतरनों में भी हम उन्हें कहीं न कहीं से ढूंढ निकालते हैं। अब तो हमने कठिन और विषम परिस्थितियों में भी खुश रहना सीख लिया है। अनिश्चितकालीन बिजली की कटौती के बाद हम इंतजार करते करते उसके आते ही खुश हो जाते हैं। गड्ढों भरी टूटी फूटी सड़क पर चलते हुए, व्यवस्था को कोसते हुए प्रसन्न वदन रास्ता तय कर लेते हैं। टमाटर चाहे ढाई सौ रूप्ए किलो बिके, दाल, तेल दो सौ रूपए या प्याज सौ रूपए किलो, हम कभी निराश नहीं होते और आशावादी विचारधारा के तहत उस कालखंड में भी खुश रह लेते हैं, यह मानकर कि समय आया है तो चला भी जाएगा। हमेशा तो यही रेट रहेंगे नहीं। यह सोचकर अपनी खुराक में भले ही कटौती कर देते हैं लेकिन खुश रहना नहीं छोड़ते। कई बार तो हम बेवजह भी खुश हो लिया करते हैं।

सुखद है कि दुनिया की खुशहाली से जुड़ी रिर्पोट जारी की जाती है जिसमें सबसे अधिक खुशहाल देश से लेकर सबसे कम खुशहाल देशों की सूची जारी की जाती है। यह रिपोर्ट तमाम मुद्दों को लेकर उनकी रैंकिंग के आधार पर तैयार की जाती है। वर्ष 2023 की हैप्पीनेस की रिपोर्ट के अनुसार सूची में हमारे देश का स्थान 126 वां है। हमारे हैप्पीकरण के इतने तिकड़मों के बावजूद आश्चर्य की बात है कि अगर हम इतनी खुशी के बाद भी 126 वें स्थान पर हैं तो सूची में हमसे ऊपर खुशहाल देशों की खुशी के बारे में कल्पना की जा सकती है। हम इतनी विकट और विषम परिस्थितियों से जूझने और मौके बेमौके की खुशियों के हैप्पीकरण के बावजूद 126 वें पायदान पर है।

खैर, जो भी हो, हमें हर हाल में खुश रहना चाहिए, क्योंकि यही सूत्र वाक्य हमारे पूर्वज, पीढ़ी दर पीढ़ी हमें देते चले आए हैं। इस संबंध में साहिर लुधियानवी का शेर याद आता है- गम और खुशी में फर्क न महसूस हो जहाँ, मैं दिल को उस मकाम पे लाता चला गया।

प्रेस बीफिंग में बोला 'रावण' दशहरे पर नहीं मरूंगा?

प्रभुनाथ शुक्ला
भदोही

सोटागुरु का खैनी बनाने का अंदाज ही जुदा है। उनकी अदा पर लाखों फिदा हैं। सोटागुरु के खैनी बनाने का अंदाज उस समय बेइंतहा हो जाता है जब सिर पर पगड़ी बधी हो और मूछे नागिन डांस करती हों। उनकी खैनीवाली अदा के लाखों दीवाने हैं। सोटागुरु कहते हैं 'अस्सी चुटकी नब्बे ताल, तब देखो खैनी की चाल।' चौपाल पर सोटागुरु का खैनीडांस जब होता है तो कितने युवा मस्ती में खुद को खो बैठते हैं। वह जमींन पर होते हुए भी क्रूज की सैर कर आते हैं। सोटागुरु को देश दुनिया की अच्छी जानकारी है। बस, उन्हें कोई छेड़ दे तो बात बन जाए।

खबरीलाल ने सोटागुरु को एक गंभीर खबर सुना कर आखिर छेड़ ही दिया। खबर सुनते ही सोटागुरु के चेहरे पर हवाईयां उड़ने लगीं। वह धर्मसंकट में पड़ गए। उनके माथे पर चिंता की लकीरें साफ दिखने लगीं। उन्होंने स्पष्टीकरण मांगते हुए इस खबर की अंतिम पुष्टि की इच्छा से पूछा। खबरीलाल क्या तुम सच कहत हौ। जी बिल्कुल! सोटागुरु, पक्की खबर है। अबकी दशहरे पर रावण ने हड़ताल कर दिया है। उसने प्रभु श्रीराम को व्हाट्सेप, मैसेंजर, इंस्टाग्राम, फेसबुक और मेल के जरिए संदेश भेज दिया है कि अबकी दशहरे पर वह नहीं मरेगा। रावण ने लंका में इंटरनेशनल मीडिया की प्रेस बीफ भी बुलाकर अपनी इच्छा जाहिर कर दी है। दुनिया भर में यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गयी है। इस पर इहलोक और परलोक में डिबेट छिड़ गयीं है। रामजी को भेजे संदेश में रावण ने साफकहा है कि त्रेता से लेकर हम मरते-मरते कलयुग तक आ पहुंचे। पांच हजार साल से कलयुग में भी मरते आ रहे हैं। लेकिन हमने अब मुफ्त में मरने का इरादा छोड़ दिया है। रावण ने कहा है- कितनी बार मैं मरूंगा? युगों-युगों तक मरने का ठेका क्या हमी ने ले रखा है। पूरे देवलोक में इस खबर से खलबली मच गयीं है। जबकि इससे भी बड़ी आश्चर्य की बात तो यह है कि रामजी ने रावण की हड़ताल को जायज बताया है।उन्होंने कहा है कि रावण की हड़ताल बिल्कुल जायज और लोकतांत्रिक है। प्रभु की इस लोकतांत्रिक इच्छा से विष्णुलोक में खलबली मच गयीं है। जबकि रावण की लंका में इसे श्रीराम का समदर्शी न्याय बताते हुए मुक्त कंठ से प्रशंसा हो रही है।

खबरीलाल ने सोटागुरु को बताया कि देवलोक की मीडिया इस खबर को युगान्तकारी बताते हुए ब्रेकिंग चला रहीं है। सभी चौनल इस पर डिबेट कर रहे हैं। देव और दैत्यलोक के विश्लेषक अपने-अपने तरीके से इस पर डिबेट कर रहे है कि भविष्य में इसका क्या असर होगा। मीडिया में रामजी ने रावण के हड़ताल का समर्थन क्यों किया इसकी वजह तलाशी जा रहीं है। देवलोक चाहता है कि प्रभु श्रीराम इसका स्पष्टीकरण दें। जबकि रावण की लंका में इस पर खूब जश्न मनाया जा रहा है, लेकिन विभीषण परेशान हैं। आखिर यह सब हुआ कैसे।

सोटागुरु ने कहा निशानेबाज तुमने यह खबर सुना कर त्यौहार का मजा किरकिरा कर दिया। हमने सोचा था कि दशहरा करीब है और कोरोना चरसी नींद में है। अबकी सबकुछ अच्छे से मनेगा। लेकिन रावण ने तो होलियाना मूड में भांग पीकर फैसला सुना दिया। त्यौहारी और चुनावी मौसम में सोचा था कुछ खैरात का सरकारी गिफ्त मिल जाएगा। लेकिन भिया, रावण को क्या बोले वह तो रावण ठहरा। सोटागुरु, रावण कह रहा था कि डीजल, पेट्रोल और राई का तेल महंगा हो गया है। हमारे 'एक लाख पूत और सवालाख नाती' बेकारी और बेगारी झेल रहे हैं। अनगिनत को मुए कोरोना ने लूट लिया। किसी तरह मुझे बख्श दिया है। फिर इस महंगाई के दौर में आखिर मुफ्त क्यों मरूं। जब सब कुछ बिक रहा है तो मेरी भी तो बोली लगनी चाहिए। आखिर दशहरा तो अपुन का टाइम है भाय। सरकार तो हर साल दशहरा और दिवाली पर अपने लोगों को बोनस और इंक्रीमेंट देती है। ऊपर से लोग काजू कतली का गिफ्ट भी पाते हैं। मुझे तो हर साल मुफ्त में मरने का भी बोनस नहीं मिलता।

सोटागुरु गंभीर चिंतन में चले गए। गहरी सांस लेते हुए कहा अब क्या होगा खबरीलाल। होगा क्या गुरु, अबकी ऊंट ने करवट बदल ली है। सूत्रों से खबर आयी है कि देवलोक की अपातकाल मीटिंग में रामजी खासे नाराज हैं। उन्होंने कहा है कि रावण की बात जायज और लोकतांत्रिक है। उसने सच कहा है कि एक गुनाह की सजा उसे कितनी बार दी जाएगी। उसका कथन तर्कसंगत है कि प्रभु! हमने तो माँ सीता का सिर्फएकबार हरण किया था। जिसकी सजा में मुझे त्रेता से लेकर कलयुग तक मरना पड़ा। जबकि यहां तो हर रोज सीता का हरण होता है। रोज जलायी जाती हैं। चीरहरण आम बात है। मैं तो उस दौर में अकेला रावण था अब तो लाखों हैं जो माँ सीता को रोज हरते हैं। हर गली, मोहल्ले, चौराहे और घर में हैं नाथ। फिर प्रभु, मेरे भी तो लोकतांत्रिक और मानवीय अधिकार हैं। अबकी दशहरे में मुझे माफ करो। प्रभु, पहले हर मन और घर में बैठे लाखों उस रावण को मारिए, फिर मुझ पर विचार करिए

करवा चौथ

लघुकथा

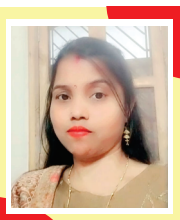

रीना सोनालिका
बोकारो झारखण्ड

एक तरफ करवा चौथ था, दूसरे तरफ पति देव से हमारी लड़ाई चल रही थी, ओर हमारा मौन व्रत चल रहा था, पर मैंने मन ही मन करवा चौथ व्रत करने की ठान ली और मैंने करवा चौथ ब्रत का उपवास रख लिया पति देव भी कहां कम थे, वो मेरे मन को भाप गए, और उन्होंने भी करवा चौथ व्रत का उपवास रख लिया, मै किचन जाकर खाने के लिए कुछ बानाती, वो पर पेट दर्द का बहाना करके ऑफिस चले गए। उधर से लौटे तो उन्होंने मेरे पसंद की साड़ी चूड़ी बिंदी ओर सिंगार का सारा सामान लाकर रख दिए, बिना कुछ मुझसे बोले वहां से चल दिए मुझे तो जोरो से गुस्सा आ रहा था, आखिर क्यूं कर रहे हैं वो मेरे लिए इतना सबकुछ, जब मुझसे बात ही नहीं करते, अब शाम होने को चला था ओर थोड़ी देर मै चांद भी निकलने वाला था, इसलिए मै पूजा की तैयारी करने लगी ओर जल्दी से इनको नया कुर्ता पैजामा लाकर इनके सामने रख दिए, ओर खुद भी तैयार होने चली गई। थोड़ी देर मै हम दोनों तैयार होकर एक दूसरे के सामने खड़े थे ओर दोनों अपने अपने कपड़े में बहुत अच्छे लग रहे थे, पर तारीफकरता कौन हमदोनो एक दूसरे से रूठे हुए थे, वो अपना चेहरा आइना मै निहार रहे थे, ओर मै अपना निहार रही थी। अब चांद भी निकल चुका था, मै छत पर जाकर पूजा करने लगी, जैसे ही मैंने चलनी निकाल कर चांद की ओर देख रही थी, तब तक ये चांद के सामने खड़े हो गए, फिर मैंने इन्हे चलनी से देखा ओर इनके पैर छुए, ओर मुझे सदा सुहागन का आशीर्वाद दिया। हम दोनों ने करवा चौथ व्रत का पालन अच्छे से किया, पति होकर भी वो मुझसे पीछे नहीं रहे, अब मै पूजा करके छत से नीचे की ओर आ रही थी तभी मेरे पांव फिसल गए इन्होंने ने मेरा हाथ थाम लिया और मुझे संभाल लिए। मुझे तो जोरो से गुस्सा आ रहा था, और मेरा गुस्सा इनपर फूट पड़ा ओर मै बोल पड़ी आखिर क्यूं कर रहे हो, मेरे लिए ये सब। तभी उन्होंने मुझसे पूछा तुम क्यूं कर रही मेरे लिए ये सब, मै रोने लगी ओर बोली मैंने तो पत्नी होने का धर्म निभा रही हूं। तभी इन्होंने मुझसे कहा किस ग्रंथ में लिखा है, पत्नियां ही पति के लिए धर्म निभा सकती है, पति नहीं। अगर पत्नी का धर्म है पति का खयाल रखना, तो पति का भी धर्म बनता है, पति का खयाल रखना, साथ जीने मरने की, हम दोनो ने कस्मे खाई है, फिर मै अकेला तुम्हे कैसे छोड़ दूं, जितना अहमियत तुम्हारी जिंदगी में मेरी है ,उतनी ही अहमियत मेरी जिंदगी में तुम्हारी है, फिर कैसे सोच लिया कि मै तुम्हे तुम्हारे हाल पर छोड़ दूंगा। ये सब सुनकर अपनी पति से लिपट कर जोरो से रोने लगी। तभी पति देव मेरी ओर देखे और बोले सुक्रिया अदा करता हूं इस करवा चौथ व्रत का, जो हम दोनों को और करीब ले आया और हमारे मन के कड़वाहट को मिटाकर मिठास ले आया।

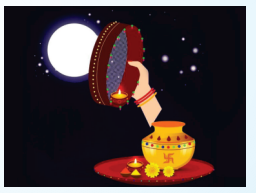

जीवन और साधना

अजीत यादव
शाहजहांपुर

मनुष्य के वैशिष्ट्य में एक विशेषता यह भी है कि उसे जिस ढाँचे में ढाला जाये उसमें वह ढल सकता है। अन्य प्राणियों में यह विशेषता नहीं है। सिंह, अजगर, बाज आदि हिंसक प्राणी अहिंसक नहीं बन सकते। गाय, हिरन, कबूतर, तितली आदि प्राणी अपनी अहिंसक प्रकृति को नहीं बदल सकते। अन्य सभी जीव जन्तु अपनी एक निश्चित प्रकृति लेकर आते हैं और साधारणत: उसी स्थिति में जीवनयापन करते हैं। किन्तु मनुष्य पर यह बात लागू नहीं होती। वातावरण परिस्थिति और प्रयत्न से उसकी प्रकृति बनती है और बिगड़ती है। एक मनुष्य से दूसरा मनुष्य शारीरिक दृष्टि से सूरत शक्ल से तो बहुत कुछ मिलता जुलता है पर प्रकृति, योग्यता, क्षमता, गुण, स्वभाव, दृष्टिकोण आदि मानसिक परिस्थितियों में अन्तर देखा जाता है। एक उन्नति के शिखर पर तेजी से चढ़ता चला जा रहा है तो दूसरा पतन के गर्त में द्रुत गति से गिर रहा है। एक व्यक्ति ने पुरुषार्थ का मार्ग अपनाकर अपनी शक्तियों को विकसित करके आश्चर्यजनक प्रगति की है तो दूसरा आलस्य और प्रमाद में पड़ा हुआ दीन-हीन बन रहा है।

प्रगति और पतन के अनेक क्षेत्र हैं। मनुष्य परिस्थितियों के साथ घुल-मिलकर उनमें से किसी भी ओर अग्रसर होता है। जिस दिशा में कदम बढ़े थे उसी के अनुरूप बनता और ढलता चला जाता है। प्रयत्नों के द्वारा मनुष्य को ढाला जा सकताहै। इस ढलने और ढालने की क्रिया को साधना कहते हैं। व्यक्ति के निर्माण की विद्या को साधना कहा जाता है,

इस समूची प्रक्रिया को ही संस्कृति भी कहते हैं। ऐसा मनुष्य भी एक पशु है, उसमें भी सब पाशविक दुर्गुण मौजूद हैं पर साधना द्वारा उसमें उपयुक्त संस्कार डाले जाते हैं। तभी वह संस्कृत एवं सभ्य कहलाने का अधिकारी बनता है। इसी प्रयत्न का पथ प्रशस्त करने में से उसकी प्रसुप्त स्थिति में पड़ी हुई महान शक्तियां विकसित हो जाती हैं।

जैसे तैसे जीवित रहने और दिन काटने की स्थिति तो साधारण रीति से भी प्राप्त हो जाती है पर यदि किसी दिशा में प्रगति करनी हो तो प्रयत्न पूर्वक साधना का मार्ग अपनाना पड़ता है। ढालने और ढलने की प्रक्रिया को अपनाना पड़ता। शारीरिक दृष्टि से उन्नति करने के इच्छुक व्यायाम की साधना करते हैं और स्थिर चित्त एवं उत्साह के साथ दीर्घ काल तक उसी ओर लगे रहे

तो एक दिन अच्छे खिलाड़ी अच्छे पहलवान, अच्छे नट और सुन्दर सुडौल निरोग दीर्घायु बनने में सफल होते हैं। शिक्षा की दृष्टि से उन्नति करने के इच्छुक लोग शिक्षालयों में प्रविष्ट होते हैं, शिक्षकों का मार्गदर्शन ध्यान पूर्वक ग्रहण करते हैं, पाठ्यक्रम को हृदयंगम करने के लिए दिन-रात पढ़ते हैं, इस प्रकार प्रयत्न करते-करते वे एक दिन विद्वान बन जाते हैं। आर्थिक क्षेत्र में प्रगति करने वाले व्यापार आदि के साधन जुटाते हैं, उनकी बारीकियों को समझने के लिए आवश्यक शिक्षण प्राप्त करते हैं, ग्राहकों को आकर्षित करने की व्यवस्था सीखते हैं। भारी दौड़-धूप करते हैं, प्रतिस्पर्धा में टिके रहने की कुशलता बरतते हैं, अपव्यय को रोकते हैं तब कहीं इस अर्थ साधना से धनवान बनने की सिद्धि प्राप्त करते हैं। इन्जीनियर, डॉक्टर, शिल्पी, मेकेनिक, वैज्ञानिक संगीतज्ञ, गायक, नर्तक, कलाकार, कवि, लेखक आदि की विशेषताएँ लो अनायास ही किसी को प्राप्त नहीं हो जातीं वरन इसके लिए चिरकाल तक, निरन्तर प्रयत्न करते रहना पड़ता है, तब कहीं यह सफलताएँ उपलब्ध होती हैं। यदि यह प्रयत्न एवं साधन न जुटे तो इन विशेषताओं को प्राप्त कर सकना भला किसी के लिये कैसे सम्भव हो सकता है।

जिस प्रकार मनुष्यों में शारीरिक दृष्टि से साधारण-सा ही अन्तर होता है, इसी प्रकार मानसिक दृष्टि से भी थोड़ा-सा ही अन्तर है। यदि हम किसी को पतनोन्मुख देखते हैं तो इसका कारण उसकी साधना एवं साधन ही हैं। व्यक्ति गीली मिट्टी के समान है निश्चय ही वह साधनों के आधार पर, साधनाओं के आधार पर ढाला जाता है, ढलता है। उपर्युक्त भौतिक क्षेत्रों में जिस प्रकार साधना एवं साधनों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार गुण, स्वभाव, आदत, चरित्र, आचरण, आदर्श, विश्वास, भावना, दृष्टिकोण आदि मानसिक विशेषताओं के निर्माण में भी साधना एवं साधन ही प्रधान कारण हैं। यदि उनकी ओर उपेक्षा रखी जाये तो असंस्कृत स्थिति ही बनी रहेगी। जिनकी मनोभूमि का सावधानीपूर्वक निर्माण नहीं हुआ है, वे अपने प्रयत्नों से किसी भौतिक सफलताओं में सफल भले ही हो गये हों, आन्तरिक दृष्टि से हीन दशा में ही पड़े रहेंगे और हीनता उन्हें कभी भी महान पुरुष की, सभ्य नागरिक की, श्रेष्ठ मानव की स्थिति में न पहुँचने देगी। यह अभाव मानव जीवन का सबसे बड़ा अभाव है। साधना से ही जीवन ऊर्जा सही प्रयोग कर जीवन लक्ष्यों को सिद्ध किया जा सकता है।

बिजी बीज प्री-स्कूल में धूमधाम से मनाया गया विजय दशमी का पर्व

बच्चों ने किया रामलीला का मंचन और गरबा नृत्य

लोक पहल

शाहजहांपुर। बुराई पर अच्छाई की विजय के प्रतीक, दशहरा के अवसर पर साउथ सिटी स्थित बिजी बीज प्री-स्कूल में रावण के पुतले का दहन किया गया। इस मौके पर बच्चों ने रामलीला का मंचन भी किया। आरंभ में प्रधानाचार्या वसु गोयल ने सभी बच्चों को रामायण और राम रावण संग्राम की लघु कथा सुनाई। इसके उपरांत प्रभु श्री राम के वनवासी भेष में आराध्य शर्मा ने सांकेतिक बाण से रावण के पुतले पर वार किया जिसके बाद उसमें मुख्य अतिथि विजय कुमरा ने अग्नि दी। इस मौके पर उन्होंने कहा कि इस पुतले के साथ ही हर वर्ष हम सब को भी अपने भीतर छुपे क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार, द्वेष रूपी रावण को बाहर कर एक नई शुरुआत करनी चाहिए। इस अवसर पर स्कूल के निदेशक रोहित गोयल, अतुल महरोत्रा, अखिल मेहरोत्रा, पूनम एवं अनुभा मेहरोत्रा, अचल

मेहरोत्रा, मंजु कुशवाह, तृप्ति रस्तोगी, संध्या शुक्ल, दीपाली गुप्ता, शक्ति मिश्रा, देवांशी मेहरोत्रा आदि मौजूद रहे। रामलीला मंचन में शानवी श्रीवास्तव, कुशाग्र पांडे, यश, काव्यांश चौधरी, आरना सिंह, अध्यांश गुप्ता, अभिनव सिंह, अयन्श गुप्ता, निवान कपूर, सार्थक शर्मा, ऋषिका बयाल, आव्यान आदि ने भी अहम भूमिका निभाई। इसके उपरांत बच्चों और उनकी माताओं ने डांडिया और गरबा नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका में नीतू कुमरा, वीणा सिंह और डा श्वेता जायसवाल ने डा नीतिका गुप्ता और उनकी पुत्री अनाहिता गुप्ता को बेस्ट ड्रेस्ड मदर एंड डॉटर का तथा श्रुति शर्मा को बेस्ट डांसर के पुरस्कार से नवाजा गया। वहीं बच्चों में कक्षा केजी के काव्यांश चौधरी और ऋषिका को बेस्ट डांसर का पुरस्कार दिया गया। आभार निदेशक रोहित गोयल ने व्यक्त किया !

ओसीएफ रामलीला में राम के बाणों से मिली रावण को मोक्ष

असत्य पर हुई सत्य की विजयी, धूं-धूं करके जल उठा रावण और मेघनाथ का पुतला

लोक पहल

शाहजहांपुर। अन्तिम दिन फैक्ट्री स्टेट श्री रामलीला मंचन का शुभारंभ भगवान के स्वरूपों की आरती उतार कर व नारियल फोड़ कर किया। राम लीला मंचन में दर्शाया गया रावण के भाई कुंभकर्ण व पुत्र मेघनाथ का वध हो जाता है उसके बाद रावण को यह सूचना मिलते ही रावण व्याकुल होता है रावण युद्ध की तैयारी करता है जिस पर उसकी पत्नी मंदोदरी रावण से कहती है कि अब भी आप सीता को वापस कर दीजिए सीता कोई साधारण स्त्री नहीं बल्कि स्वयं मां जगदम्बा स्वरूपा का अवतार हैं आपकी इसी जिद ने लंका का सर्वनाश कर दिया ! रावण कहता है यदि अब मैं युद्ध से पीछे हटता हूं तो मैं कायर कहलाऊंगा। इसलिए मैं युद्ध करूंगा और यदि राम ईश्वर का अवतार है तो मैं मोक्ष उन्हीं के हाथों लूंगा। रावण युद्ध की तैयारी करता है और महादेव के पास जाता है महादेव से प्रार्थना करता है कि मेरी विजय हो। उसके बाद

रावण युद्ध में जाता है और राम रावण का भीषण संग्राम होता है युद्ध में रावण धाराशायी हो जाता है। रावण की मृत्यु के बाद राम लक्ष्मण से कहते हैं कि रावण महापंडित महाज्ञानी है जाओ उसे जाकर ज्ञान लो लक्ष्मण जी रावण के सर के पास खड़े हो जाते हैं इस पर रावण कहते हैं यदि किसी से ज्ञान लेना हो तो उसके सर पर नहीं पैरों में रहना चाहिए और रावण अपने अंतिम उपदेश के साथ संसार विदा लेते हैं !

रावण अंकित ,राम रोहित ,लक्ष्मण देवेंद्र,सीता रानी,शिवी मंदोदरी,मोहित हनुमान, सुग्रीव सुभाष, आदि कलाकार सम्मिलित रहे।

इस मौके पर अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, टीसीएल संतोष कुमार सिन्हा, अंजू सिन्हा, वरिष्ठ महाप्रबंधक, ओसीएफ अखिलेश कुमार, पूनम सक्सेना, अपर महाप्रबंधक अरूण कुमार वर्मा, मीरा वर्मा, मेला महासचिव हितेश अग्रवाल दिनेश सक्सेना, एससी सिंह, रवि बाबू, निर्देशक पैट्रिक दास, देवेश दीक्षित, निर्देशक अंकित सक्सेना, महेंद्र दीक्षित, अरुण डी आर, रोहित सक्सेना, सतीश आदि मौजूद रहे।

27 से 30 अक्टूबर तक 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन

27 अक्टूबर को निकाली जाएगी शक्ति कलश यात्रा, 29 को दीप महायज्ञ का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान शहर के मिशन स्कूल मैदान में 27 से 30 अक्टूबर तक 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यह जानकारी गायत्री शक्ति पीठ गौहरपुरा में बनारस से आए युग ऋषि संदेशवाहक विद्याधर मिश्र एक पत्रकार वार्ता में दी। उन्होंने बताया कि नव युग निर्माण योजना एवं विचार क्रांति अभियान के तहत 27 अक्टूबर को बाबा बनखंडी नाथ मंदिर से शक्ति कलश यात्रा निकाली जाएगी जो शक्ति पीठ पर आकर समाप्त होगी। उन्होंने 28 अक्टूबर से 30 अक्टूबर तक होने वाले गायत्री महायज्ञ एवं 29 अक्टूबर को सायं होने वाले दीप महायज्ञ में सभी सहभागिता का आवाहन किया। इस श्री मिश्रा ने कहा कि आध्यात्मिक प्रयोग के माध्यम से वातावरण का शोध इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने बताया कि संपूर्ण कार्यक्रम शांतिकुंज हरिद्वार से आई टोलियों द्वारा संपन्न कराया जाएगा।

कार्यक्रम के प्रमुख आयोजक जय सिंह यादव ने बताया कि 27 अक्टूबर को शक्ति कलश यात्रा को जिला पंचायत अध्यक्ष ममता यादव हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगी। जिला समन्वयक सूरज वर्मा ने कहा कि 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में हर व्यक्ति की सहभागिता जरूरी है। इस अवसर पर जिला मीडिया प्रभारी रंजीत वर्मा बनारस से आए ओमेश्वर सेपट, मुख्य प्रबंधक ट्रस्टी राजा राम मौर्य आदि उपस्थित रहे।

अमृत कलश यात्रा पर रवाना हुई नेहरू युवा केन्द्र की टीम

लोक पहल

शाहजहांपुर। आजादी का अमृत महोत्सव के समापन अभियान 'मेरी माटी मेरा देश' कार्यक्रम अंतर्गत अमृत कलश यात्रा को जिले से राज्य स्तरीय कार्यक्रम लखनऊ में व राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम नई दिल्ली में प्रतिभाग करने के लिए टीम रवाना हो गई। टीम को जिलाधिकारी उमेष प्रताप सिंह, सीडीओ एसबी सिंह, एडीएम (प्रशासन), जिला पंचायत राज अधिकारी आदि ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। नोडल अधिकारी के रूप में जिला युवा अधिकारी नेहरू युवा केन्द्र मयंक भदौरिया, जिला युवा कल्याण अधिकारी एनके सिंह, क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी राहुल उपाध्याय अमृत कलश यात्रियों के साथ गए हैं।

अमृत कलश यात्रियों में नेहरू युवा केन्द्र के निर्दोष शर्मा, सोनवीर, रवि सक्सेना, प्रिया श्रीवास्तव, अनामिका शर्मा, पवन यादव, चंद्रशेखर, दीपक, आशीष कुमार, आशीष मिश्रा, मानवेंद्र, सत्यम दीक्षित, लवली सक्सेना, रोहित यादव, ललित कुमार पाल, रंजीत सिंह, श्रुति गंगवार, रोशनी यादव, इंद्रजीत, अर्चना शर्मा आदि शामिल रहे। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने समस्त अमृत कलश यात्रियों को निरन्तर राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

रामचरितमानस में अनासक्ति का संदेश

डा. कनक रानी
पूर्व प्राचार्य

मानव जीवन को आदर्शों से अनुप्राणित करने वाले ग्रंथ रामचरितमानस में राम नायक हैं, भारतीय संस्कृति के उन्नायक हैं। यहां सनातन संस्कृति को उल्लेखनीय बनाने वाले अगणित संदेश-उपदेश यत्र-तत्र समाहित हैं। इसमें निहित अनासक्ति का संदेश लोक से परलोक तक अभ्युदय का पथ प्रशस्त कर सकता है।

प्रत्येक प्रकरण अपने अन्दर उदात्त शिक्षाओं को संजोए हुए है जिनमें प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जीवन को लाभान्वित करने का सामर्थ्य है। अस्तुए एक प्रकरण का उल्लेख है- स्वर्णमृग के आकर्षण में सीता को अपार कष्ट सहने पड़े। साथ ही, उस मायावी मृग को पकड़ने के प्रयास में मर्यादापुरूषोत्तम राम को अथाह पीड़ा का सामना करना पड़ा। यहां संज्ञान में आता है कि जीवन यात्रा के मध्य सांसारिक आकर्षण सुख में सहायक तो दिखते हैं किंतु जीवन के गन्तव्य को धुंधला कर देते हैं। रामचरितमानस ग्रंथ आत्मनिग्रह का संदेश देता है। विषयों के प्रति आसक्ति से सतर्क करता है। कामादि दुर्वृत्तियों के दमन पर बल देता है। भोग विलास में लिप्सा का परिणाम तो सदा कष्टकारी बताया गया। नीतिकार भर्तृहरि के अनुसार यह विषयों की प्रबलता ही तो है कि सब कुछ जानते हुए भी लोग इस ओर खिंचते चले जाते हैं। इतना ही नहीं, विषयों में अतीव अनुरक्ति तो गुणवत्ता- मनुष्यता- कुलीनता- सत्यता पर प्रतिकूल प्रभाव भी डाल सकती है- विषयासक्त चित्तानां गुण: को वा न नश्यति। न वैदुष्यं न मानुष्यं नाभिजात्यं न सत्यवाक्।।

काम आदि का प्रबल बंधन विद्वज्जनों को भी बलात् आकर्षित कर लेता है। प्रतिशोध के आवेश-परस्त्री पर कुदृष्टि- शक्ति के मद मे शास्त्रज्ञ रावण को घर- परिवार-कुटुम्ब-स्वर्ण नगरी लंका के साथ-साथ जीवन भी खोना पड़ा। राज्य-लोभ तथा अनुज- वधू के मोह में बलशाली बालि को भी प्राण गंवाने पड़े। कामासक्ति के कारण त्रिभुवन विजेता रावण की बहन शूर्पणखा को अपने मान-सम्मान से हाथ धोना पड़ा।

जीवन प्रणाली के सम्यक् संचालन हेतु राम का पावन चरित्र सुपथ आलोकित करता है, त्यागपूर्वक भोग में प्रवृत्ति तथा भोग विलास से निवृत्ति का उपदेश देता है। राम का संपूर्ण जीवन अनासक्ति की व्याख्या है। राम के वैयक्तिक जीवन में भौतिक सुखों का कोई तात्पर्य नहीं। पितृ-आज्ञा के सामने राजसी वैभव तथा राज्य सिंहासन आकर्षणहीन हो गए। सीता ने पति सेवा को प्रमुखता देते हुए तथा सुख-समृद्धि को तिलांजलि देते हुए वनगमन को उचित माना। आदर और प्रेम के वषीभूत लक्ष्मण ने राम के अनुगमन को ही वरीयता देते हुए भोग विलास तथा गृहस्थ जीवन

के सुखों से मुख मोड़ लिया। भरत की भ्रातृभक्ति को अयोध्या के राजपाट का प्रबल आकर्षण भी डिगा न सका। विजय के उपरांत विभीषण को निष्कण्टक स्वर्गा नगरी लंका को सौंपना राम के अनासक्त जीवन की पुष्टि ही है।

आज मानव मृगतृष्णा से आक्रांत है। मृगतृष्णा अर्थात् वास्तविक न होकर भ्रम की स्थिति। भौतिकता से संतुष्टि की अनुभूति तो भ्रम मात्र है। भौतिक वस्तुओं का स्वरूप नश्वर है। सौंदर्य भी क्षणिक ही है। उसमें आत्मिक आनन्द की खोज मृगतृष्णा ही है। ये सभी सर्वोच्च ध्येय को धूमिल करने वाले हैं। स्मरणीय है कि मृगतृष्णा के संदर्भ में अथक् प्रयास करने वाले व्यक्ति के हाथों में रिक्तता ही नियति है। मृगतृष्णा की लालसा के अवांछित परिणाम जीवन में दु:ख दे सकते हैं। यही नहीं, बिना विवेक के किसी कर्म में प्रवृत्ति भी पश्चाताप का कारण बन सकती है। अत: कल्याण मार्ग से इतर मार्ग पर चलना-बढ़ना कदापि हित में नहीं।

वर्तमान का कटु यथार्थ है कि पाश्चात्य प्रभाव में भौतिक पदार्थों का प्रलोभन जनमानस को आकर्षित कर रहा है। भौतिकता की चमक-दमक में सत्य-असत्य, ग्राह्य- अग्राह्य, भोग और त्याग के मध्य भ्रान्ति की स्थिति है। बहुविध लालसाओं की अपूर्णता के कारण क्रोधादि विकृतियां पनप रही हैं। ध्यातव्य है कि विषयों में आसक्ति शरीर को क्षणिक सुख दे सकती है। किंतु चिरंतन तत्व तो इस सबसे पृथक् है, यहां भोगविलास की अपेक्षा नहीं। निश्चय ही, तर्क को परे रखकर भौतिकता की चाहत में दौड़ लगाना अभ्युदयकारी नहीं।

विषयासक्ति के दुष्परिणाम से सचेत किया गया कि- तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा:। भोगा: न भुक्ता: वयमेव भुक्ता:। इस हेतु मन:स्थिति को सबल एवं संयमित बनाने की आवष्यकता है। इसमें कोई संषय नहीं कि मोह आदि के दमन से वैयक्तिक-सामाजिक जीवन का सुचारू संचालन संभव है। रामचरितमानस ग्रंथ आसक्ति के दुष्परिणामों से सावधान करता है। दसों इंद्रियों- ज्ञानेंद्रियों तथा कर्मेंद्रियों- को अनुशासित करना श्रेयस्कारी है। रामचरितमानस मानव मात्र को सतर्क करता है कि सद्वृत्तियों में यशस्वी जीवन के निर्माण की योग्यता होती है। कुत्सित वृत्तियों से तो अपयश के अतिरिक्त कुछ भी हाथ नहीं लगता। रामचरितमानस में नारी के साथ अनुचित व अमर्यादित व्यवहार को अक्षम्य अपराध की कोटि में रखा गया। जीवन में अर्थवत्ता और पवित्रता का समावेश करने के लिए औचित्य पर विचार आवष्यक है। भोगविलास के संदर्भ में अनासक्ति का भाव अपेक्षित है। यही सांस्कृतिक विचारणा है। यही उदात्त जीवन पद्धति है। यही प्रषस्त्य पथ है। अत: रामचरितमानस में भोगों से विरक्ति तथा राम में अनुरक्ति के स्वर मुखरित हु,-काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक-सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।